यात्रा

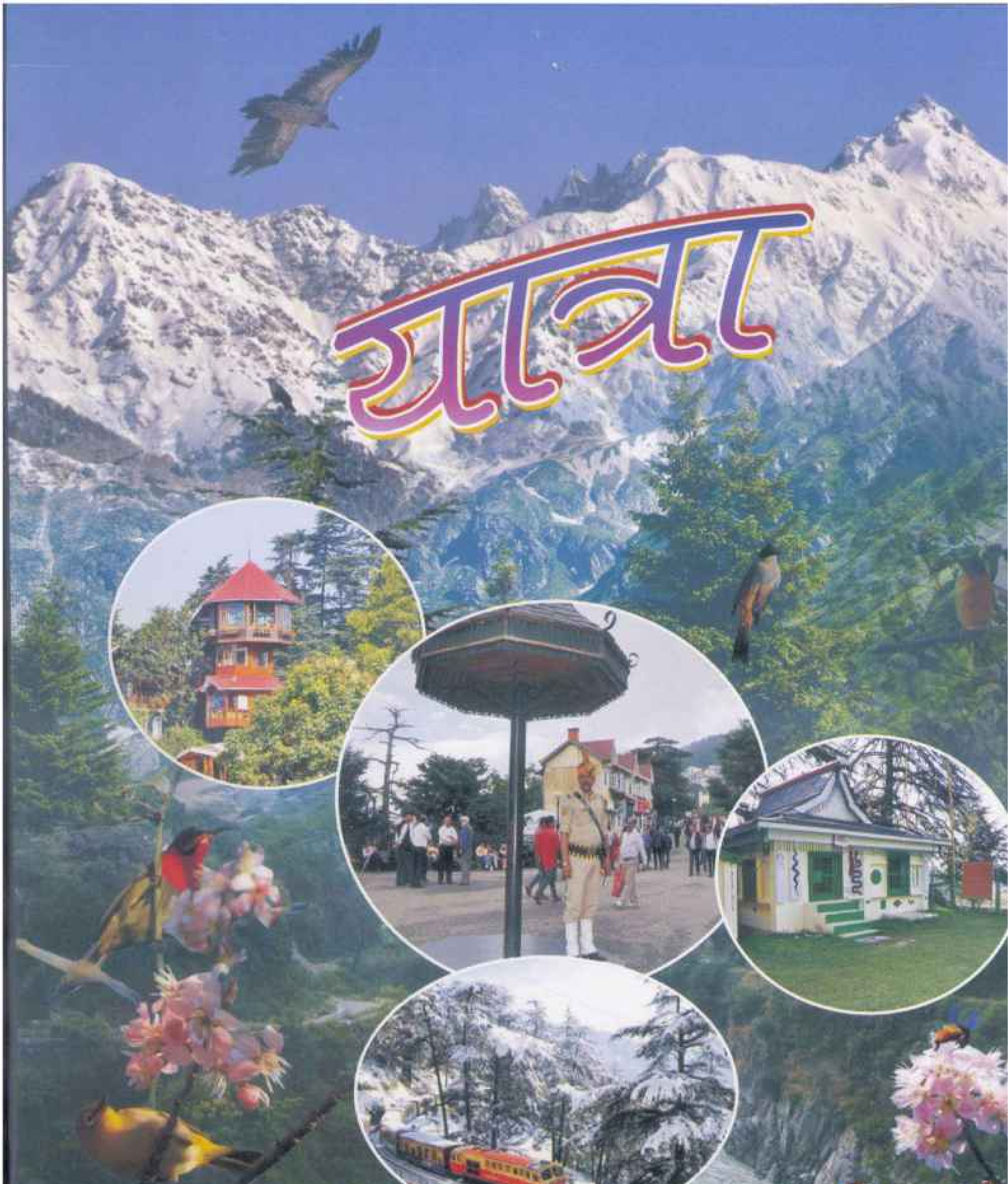

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति कार्यालय, शिमला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला की बैठकों का आयोजन

यात्रा

अंक - 21 वर्ष 2016

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (कार्यालय) शिमला की वार्षिक पत्रिका

संरक्षक

श्री राजेन्द्र कुमार
मुख्य आयकर आयुक्त एवं
अध्यक्ष, नराकास, शिमला

मार्गदर्शक

श्री एच.सी. नेगी
प्रधान आयकर आयुक्त एवं
उपाध्यक्ष, नराकास, शिमला

संपादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा) एवं
सचिव नराकास, शिमला
मो.: 09530702020

सह-संपादक

डॉ. राजेश्वरी गौतम
चीफ पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय

डॉ. पंकज कपूर
केन्द्रीय विद्यालय जतोग

सुश्री ऊषा गोस्वामी
भारतीय वन सर्वेक्षण विभाग

श्री राजेश कुमार
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

नोट

इस पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित रचनाकारों के हैं। सम्पादक मंडल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए लेखक स्वयं उत्तरदायी होंगे।

इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी बनाने के लिए पाठकों के सुझाव आमंत्रित हैं। -संपादक

इस अंक में

1.	आवरण पृष्ठ	2
2.	संदेश	3-10
3.	नराकास शिमला का वार्षिक राजभाषा समारोह की झलकियां	11
4.	मुख्य आ.आ. कार्यालय, शिमला राजभाषा पुरस्कार समारोह	12
5.	नराकास द्वारा हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन	13-14
6.	नराकास के सदस्य कार्यालयों में राजभाषा गतिविधियां	15-19
7.	सरकारी कामकाज में सुगम, सरल और सहज हिंदी का प्रयोग	20
8.	नराकास द्वारा कार्यालयध्यक्षों को पुरस्कार	21
9.	नराकास द्वारा विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम	22-25
10.	नराकास द्वारा आयोजित स्लोगन प्रतियोगिता के कुछ स्लोगन	26
11.	आँसू	27
12.	रूह की खेती लहलहा रही है	28
13.	क्षणिकाएं	29
14.	कागज़ के रिश्ते	30
15.	रोज़गार और शादी	31
16.	विचित्र चलचित्र	32
17.	क्षणिकाएं	33
18.	मैं 'शून्य' भी न हो सका	34
19.	शील और सत्य ही आत्मा हैं	35
20.	अपना अपना महाभारत	36
21.	राजभाषा पुरस्कार	37
22.	धन का सदुपयोग, बलि प्रथा अधर्म है	38
23.	क्या तुम सच में बुरी हो	39
24.	सूरज	40
25.	क्यों तोड़ा तुमने इन कलियों को	41
26.	गुरुकुल	42-44
27.	माँ	45
28.	सभ्यता की ओर एक नन्ही कुलाँच	46
29.	हिन्दी मेरी संस्कृति	47
30.	पंचतंत्र तथा प्रबन्धन क्षमताएं	48-50
31.	गेहूँ एवं जौ रतुआ रोगों के शोधकार्यों का सारसंग्रह	51-53
32.	पीलिया रोग - लक्षण, उपचार तथा रोकथाम	54-55
33.	क्षणिकाएं	55
34.	संत रविदास	56
35.	नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला के सदस्य कार्यालयों की सूची	57-59
36.	पिछले अंक के बारे में पाठकों के विचार	60

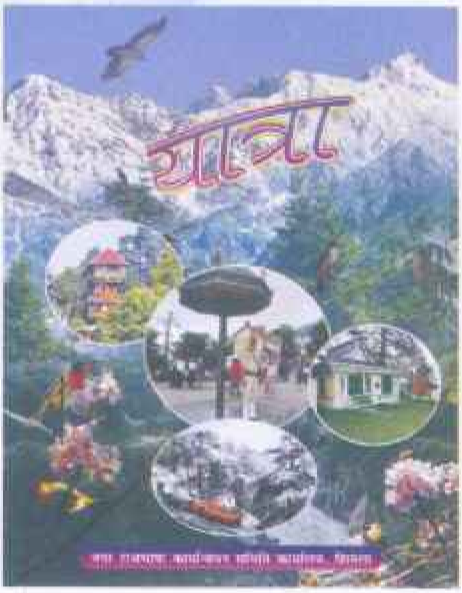

आवरण पृष्ठ

सृष्टि की हर रचना अपनी 'यात्रा' पर है, चाहे वह नदी हो, प्राणी हों, वृक्ष हों, नक्षत्र हों। प्रत्येक की अपनी यात्रा है, अपनी गति है, अपना गंतव्य है। 'भाषा' की भी अपनी यात्रा है। 'भाषा बहती नीर' – कबीर। लेकिन शिमला की यात्रा का अपना ही रोमांच है, अपना आकर्षण है।

पत्रिका का आवरण पृष्ठ जहां हमारी समिति की 'राजभाषा यात्रा' का प्रतीक है वहीं हिमाचल की सौंदर्य यात्रा का भी। आवरण पृष्ठ के कुछ फोटोग्राफ श्री राजाघोष, आयकर सहायक आयुक्त के कैमरे की देन है। इसके लिए उनका हार्दिक आभार। हिमाचल का नाम ही हिम और आंचल से बना है। अत: हिमाचल के बर्फीले पर्वत हमेशा से सबके आकर्षण का केन्द्र रहे हैं। शिमला की रेल यात्रा का अपना ही रोमांच है। 1903 में बनी, पटरियों के बीच की दूरी 2.5 फुट, 103 सुरंगें और नदी–नाले एवं घाटियों को जोड़ते हुए छोटे–बड़े 870 पुल।

'नाल–देहरा यानि नागों का देवता'। नागदेव मंदिर। यहां के सौंदर्य का इतना आकर्षण कि लार्ड कर्जन ने अपनी बेटी का नाम ही बदलकर 'नाल देहरा' रख दिया। 'माल रोड़' के आकर्षण का केन्द्र स्कैंडल प्वाइंट – एक अपनी गाथा संजोए हुए। हिमाचल में पाए जाने वाले विभिन्न प्रजातियों के पक्षी। यही है हमारी 'यात्रा'।

-डॉ. सुरेन्द्र शर्मा

शमीमा सिद्दिकी
SHAMIMA SIDDIQUI
भारत के राष्ट्रपति की उप प्रेस सचिव
Deputy Press Secretary
to the President of India

राष्ट्रपति सचिवालय,
राष्ट्रपति भवन,
नई दिल्ली-110004
PRESIDENT'S SECRETARIAT,
RASHTRAPATI BHAVAN,
NEW DELHI-110004

संदेश

भारत के राष्ट्रपति, श्री प्रणब मुखर्जी को यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'यात्रा' का प्रकाशन किया जा रहा है। आशा है पत्रिका में दी गई सामग्री पाठकों के लिए उपयोगी एवं ज्ञानवर्द्धक होगी।

राष्ट्रपति जी पत्रिका के प्रकाशन के लिए अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

राष्ट्रपति की उप प्रेस सचिव

भारत के उपराष्ट्रपति के
विशेष कार्य अधिकारी
OFFICER ON SPECIAL DUTY
TO THE VICE-PRESIDENT OF INDIA
नई दिल्ली / NEW DELHI - 110011

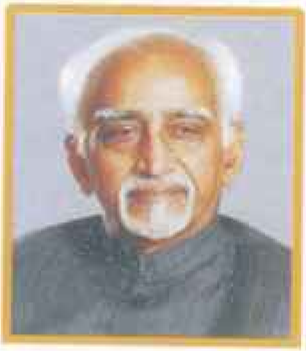

संदेश

महामहिम उपराष्ट्रपति जी को यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, दि माल, शिमला द्वारा शिमला स्थित केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से वार्षिक पत्रिका **"यात्रा"** का प्रकाशन किया जा रहा है, जो एक सराहनीय प्रयास है।

उपराष्ट्रपति जी नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति एवं मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, दि माल, शिमला के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कार्यालय के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

उपराष्ट्रपति जी प्रकाश्य वार्षिक पत्रिका "यात्रा" की सफलता हेतु अपनी शुभकामनाएँ प्रेषित करते हैं।

(अंशुमान गौड़)

नई दिल्ली
29 फरवरी, 2016

Acharya Devvrat
Governor
Himachal Pradesh

आचार्य देवव्रत
राज्यपाल
हिमाचल प्रदेश

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि शिमला स्थित केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के उद्देश्य से शिमला नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति द्वारा वार्षिक पत्रिका 'यात्रा' का प्रकाशन किया जा रहा है।

राजकाज के कार्यों के लिए हिन्दी हमेशा से ही उपयुक्त एवं प्रभावी रही है। यह प्रशासन व आम नागरिक के मध्य पत्राचार व संचार का सबसे सुलभ व सशक्त माध्यम है। लेकिन, हिन्दी को जो गौरव मिलना चाहिए था वह उसे नहीं मिल पाया। जबकि, यह पूर्णतय सत्य है कि जितने भी विकसित राष्ट्र हैं, उनकी अपनी मातृ भाषा ही राजभाषा है। लेकिन, हमें अपनी मातृ भाषा के पूर्ण उपयोग पर संकोच होता है, जो शायद विकास में बाधा है।

हिन्दी के पूर्ण उपयोग व प्रोत्साहन में शिमला नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के प्रयास सराहनीय हैं। मैं आशा करता हूँ कि वह भविष्य में भी अपने इन भागीरथ प्रयासों को जारी रखेगी।

'यात्रा' स्मारिका के सफल प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं।

(देवव्रत)

किरेन रीजीजू
KIREN RIJIJU

सत्यमेव जयते

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

29 फरवरी, 2016

संदेश

मुझे यह जानकर हार्दिक प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला अपनी वार्षिक पत्रिका **"यात्रा"** का अगला अंक शीघ्र प्रकाशित करने जा रही है। सभी सदस्य कार्यालयों की अभिव्यक्ति की प्रतीक यह पत्रिका परस्पर संवाद करने का एक श्रेष्ठ माध्यम है।

2. केन्द्रीय सरकार के कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग को बढ़ाने के लिए देश भर में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियां गंभीरता से कार्य कर रही हैं। यह एक ऐसा मंच है जिसके माध्यम से नगर स्थित सभी शासकीय कार्यालयों को राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में परस्पर किए जा रहे अच्छे कार्यों को जानने और उनका अनुसरण करने का अवसर प्राप्त होता है।

3. मैं शिमला के सभी सदस्य कार्यालयों को आह्वान करता हूं कि वे इस मंच का लाभ उठाएं और अपने कार्यालय में राजभाषा अधिनियम के प्रावधानों की अनुपालना सुनिश्चित करते हुए गृह मंत्रालय के राजभाषा विभाग द्वारा समय समय पर जारी किए गए लक्ष्यों को प्राप्त करने का हर संभव प्रयास करें।

4. पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

(किरेन रीजीजू)

गिरीश शंकर, आई.ए.एस.
सचिव
Girish Shankar, IAS
SECRETARY

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001

GOVERNMENT OF INDIA
DEPARTMENT OF OFFICIAL LANGUAGE
MINISTRY OF HOME AFFAIRS
3rd FLOOR, N.D.C.C.-II BHAWAN,
JAI SINGH ROAD, NEW DELHI-110001
www.rajbhasha.gov.in

26 फरवरी, 2016

संदेश

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति शिमला की वार्षिक पत्रिका **"यात्रा"** निरंतर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ रही है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समितियों के गठन का उद्देश्य सभी सदस्य कार्यालयों में संघ की राजभाषा नीति के कार्यान्वयन में आ रही बाधाओं का निवारण करना तो है ही, राजभाषा के प्रचार-प्रसार की इस पावन यात्रा में ज्यादा से ज्यादा लोगों को जोड़ना भी है। पत्रिका के माध्यम से सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को सृजनात्मक अभिव्यक्ति, कार्यकुशलता, गुणवत्ता एवं प्रतिभा के प्रदर्शन का स्वर्णिम अवसर उपलब्ध होता है। सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन में राजभाषा पत्रिकाओं का प्रकाशन एक सराहनीय योगदान है।

मैं राजभाषा हिंदी की पत्रिका **"यात्रा"** के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए आशा करता हूं कि आने वाले समय में पत्रिका अपने लक्ष्यों को प्राप्त करेगी।

हार्दिक शुभकामनाओं सहित,

(गिरीश शंकर)

राजेन्द्र कुमार
RAJENDRA KUMAR

सत्यमेव जयते

अध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
एवं मुख्य आयकर आयुक्त
हिमाचल प्रदेश, शिमला

संदेश

हमारी पत्रिका 'यात्रा' के इस अंक के प्रकाशन पर मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। हमारे लिए यह बहुत ही गौरव की बात है कि हमारी पत्रिका का प्रतिवर्ष नियमित प्रकाशन हो रहा है। इस पत्रिका के प्रकाशन से न केवल हमें एक दूसरे की गतिविधियों एवं प्रयासों की जानकारी मिलती है अपितु हमारे अधिकारियों और कर्मचारियों को अपनी सृजनात्मक प्रतिभा की अभिव्यक्ति का मंच भी उपलब्ध होता है।

पत्रिका के इस अंक में प्रकाशन के लिए हमें माननीय राष्ट्रपति जी, उपराष्ट्रपति जी, राज्यपाल, हिमाचल प्रदेश, गृह राज्य मंत्री एवं सचिव, राजभाषा विभाग के प्रेरणादायक संदेश प्राप्त हुए हैं, जिनके लिए हम उनके हार्दिक आभारी हैं।

मैंने कुछ समय पहले ही समिति के अध्यक्ष का कार्यभार ग्रहण किया है लेकिन समिति के कार्यों को देखकर मैंने महसूस किया है कि हमारी समिति ने सदस्य कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने और कर्मचारियों में राजभाषा के प्रति जागरुकता लाने के लिए निरन्तर प्रयास किए हैं तथा विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया है। परिणाम स्वरूप हमारे सदस्य कार्यालयों में राजभाषा के प्रयोग में काफी वृद्धि हुई है और राजभाषा संबंधी आदेशों का अनुपालन सुनिश्चित हो रहा है।

हिंदी में कार्य करना न केवल हमारी प्रशासनिक एवं वैधानिक जिम्मेदारी है अपितु एक नागरिक के तौर पर नैतिक दायित्व भी है। मुझे आशा है कि हमारे कार्यालयों के वरिष्ठ अधिकारी स्वयं हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करके अपने कार्मिकों को भी इसके लिए प्रेरित करते रहेंगे।

पत्रिका में जिन कार्मिकों की रचनाएं प्रकाशित हुई हैं वे सभी बधाई के पात्र हैं। आशा है कि इनसे प्रेरित होकर अन्य कार्यालयों से भी अगले अंक के लिए रोचक रचनाएं प्राप्त होंगी।

शुभकामनाओं सहित,

(राजेन्द्र कुमार)

एच. सी. नेगी
H. C. NEGI

उपाध्यक्ष
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
एवं प्रधान आयकर आयुक्त
हिमाचल प्रदेश, शिमला

संदेश

हमारे लिए यह बहुत ही गौरव और गर्व की बात है कि हमारी पत्रिका **'यात्रा'** का पिछले कई वर्षों से नियमित प्रकाशन हो रहा है। यह पत्रिका हमारे सदस्य कार्यालयों में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। मैं आशा करता हूं कि सभी सदस्यों के सहयोग से इस पत्रिका का नियमित प्रकाशन होता रहेगा।

पिछले वर्ष हमारी समिति का विभाजन हो गया है। बैंकों और उपक्रमों के लिए अलग समिति का गठन किया गया है। लेकिन इसके बावजूद हमारी गतिविधियों और प्रयासों में कोई कमी नहीं आई है, बल्कि उनमें वृद्धि ही हुई है। यह सब हमारे सामूहिक प्रयासों से ही संभव हुआ है। इसके लिए मैं सभी सदस्यों को बधाई देता हूं।

हिन्दी केन्द्र सरकार की राजभाषा है। हिन्दी हमारी प्रदेश की मातृभाषा और राजभाषा भी है। अत: हिन्दी में कार्य करना न केवल हमारे लिए आसान है बल्कि इसके अधिक से अधिक प्रयोग से हमारे कार्यों में पारदर्शिता भी आती है और हम अपने कार्यालयों और विभागों की नीतियों, योजनाओं और प्रयासों की जानकारी लोगों तक आसानी से पहुंचाने में सफल होते हैं। मैं नराकास, शिमला के सदस्य कार्यालयों के सभी अधिकारियों और कर्मचारियों से अपील करता हूं कि आओ हम सब यह प्रण लें कि हम अपना अधिकतम कार्य केवल हिंदी में ही करने का प्रयास करेंगे।

(एच. सी. नेगी)

डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा
सहायक निदेशक (राजभाषा)

सचिव
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति
शिमला

सत्यमेव जयते

सम्पादकीय

आपकी अपनी पत्रिका 'यात्रा' के इस अंक को आपको सौंपते हुए मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है 'यात्रा' का मुख्य उद्देश्य सदस्य कार्यालयों की राजभाषा गतिविधियों एवं नराकास के प्रयासों की जानकारी सभी सदस्यों तक पहुंचाना और सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को हिंदी में अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का मंच उपलब्ध कराना है, ताकि सदस्य कार्यालयों में राजभाषा हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़े और भारत सरकार की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित हो सके। मुझे आशा है कि 'यात्रा' का यह अंक अपने इस उद्देश्य में अवश्य सफल होगा। पिछले वर्ष हमारी समिति से उपक्रम, निगम और बैंक इत्यादि दूसरी समिति में चले गए हैं। अतः इस समिति की गतिविधियों में कुछ कमी आने की संभावना दिखाई दे रही थी, लेकिन आप सबके सामूहिक प्रयासों से हमारी गतिविधियों में कोई कमी नहीं आई है अपितु इनमें वृद्धि ही हुई है। मुझे आशा है कि राजभाषा के प्रचार-प्रसार में आपका सहयोग पहले की तरह ही हमें मिलता रहेगा।

केन्द्रीय सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए भारत सरकार नए-नए प्रयास कर रही है। संसदीय राजभाषा समिति ने भी अपने निरीक्षण कार्यक्रम बढ़ा दिए हैं। सरकार ने राजभाषा का प्रचार-प्रसार करने के लिए बोलचाल की सरल हिन्दी के प्रयोग की नीति अपनाई है। इस संदर्भ में सचिव, राजभाषा विभाग का परिपत्र पत्रिका में प्रकाशित किया गया है। इसके अनुपालन से निश्चय ही हमारे कार्यालयों में राजभाषा का प्रयोग बढ़ेगा और हिंदी में कार्य करने में सुविधा होगी। वास्तव में राजभाषा का स्वरूप वही होना चाहिए जो जनसामान्य के आपसी संवाद और व्यवहार का स्वरूप है। हम सबको पूरे मनोयोग से अपना कार्य हिन्दी में करना चाहिए क्योंकि हिंदी केवल सरकारी भाषा नहीं है अपितु यह तो हमारी राष्ट्रीय पहचान है।

मेरे पास शिमला का अतिरिक्त कार्यभार है। मैं यहां के लिए बहुत कम समय दे पाता हूँ। फिर भी मेरा यह प्रयास रहा है कि यहां की गतिविधियां न केवल पहले की तरह ही जारी रहें बल्कि उनमें और अधिक विविधता आए। मुझे प्रसन्नता है कि आप सबके सक्रिय सहयोग से न केवल इस प्रत्रिका का समय पर प्रकाशन संभव हुआ बल्कि अन्य गतिविधियां भी निर्विाध जारी हैं।

(डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा)

नराकास शिमला का वार्षिक राजभाषा समारोह-2015

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय शिमला का राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह

नराकास शिमला द्वारा नगर स्तर पर

हिन्दी कार्यशालाओं का आयोजन

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों के लिए वर्ष 2015 में नगर स्तर पर दो कार्यशालाओं का आयोजन किया गया। प्रथम कार्यशाला दिनांक 11 अगस्त 2015 को भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला के तत्वाधान में आयोजित की गई जिसमें शिमला स्थित केन्द्र सरकार के विभिन्न कार्यालयों के लगभग 50 अधिकारियों व कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह के उद्घाटन भाषण से हुआ। अपने संबोधन में उन्होंने प्रसन्नता व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले कुछ वर्षों में सरकारी कार्यालयों में हिन्दी में कामकाज में उत्तरोत्तर बढ़ौतरी हुई है। उन्होंने कहा कि भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान एक उच्च स्तरीय शोध संस्थान है जहां विभिन्न समसामयिक विषयों पर खुली अकादमिक बहस होती है, अतः आज की इस राजभाषा

कार्यशाला में उन सभी संभावनाओं पर चर्चा होनी चाहिए जो देश को भाषायी तौर पर जोड़ने का कार्य करें। उन्होंने कहा कि वैश्वीकरण के परिप्रेक्ष्य में अनुवाद की भूमिका और बढ़ गई है। अतः आवश्यकता है कि विभिन्न भाषाओं में प्रकाशित उच्च गुणवत्ता वाली पुस्तकों का अंतर अनुवाद हो ताकि विश्व स्तर पर परस्पर ज्ञान का आसानी से आदान–प्रदान हो सके। आज के सूचना प्रौद्योगिकी युग में हिन्दी को प्रशासनिक प्रणाली में और अधिक कैसे प्रासंगिक बनाया जाए इन सभी पहलुओं पर भी इस कार्यशाला में चर्चा की जानी चाहिएं।

इस अवसर पर कालीकट विश्वविद्यालय, केरल के प्रोफेसर ए. अच्युतन, जोकि इन दिनों संस्थान में अध्येता हैं, ने कहा कि हिन्दी की जो पहले स्थिति थी अब वह नहीं है क्योंकि अब हिन्दी का प्रचार–प्रसार पहले की अपेक्षा काफी बढ़ा है। केरल का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा है कि गैर–हिन्दी भाषी प्रांत होते हुए भी वहां के लोग एक दूसरे के साथ हिन्दी बोलते हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार द्वारा हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग के लिए बहुत से प्रोत्साहन कार्यक्रम चलाए गए हैं मगर अब समय आ गया है कि उन कार्यक्रमों का विश्लेषण, विवेचन और मूल्यांकन भी किया जाए। प्रोफेसर अच्युतन ने कहा कि यद्यपि हिन्दी देश के जनमानस की भाषा है और विविधताओं वाले इस राष्ट्र को एक सूत्र में पिरोने का काम करती है मगर भूमण्डलीकरण के

परिदृश्य में राजभाषा के भावी स्वरूप के बारे में इस प्रकार की कार्यशालाओं में चर्चा होनी चाहिए।

विभिन्न सत्रों में चली इस कार्यशाला में राजभाषा की दशा व दिशा तथा आज के सूचना प्रौद्योगिकी के दौर में हिन्दी का प्रयोग किस प्रकार बढ़ाया जाए इत्यादि पर भी विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला के सचिव डॉ. सुरेन्द्र शर्मा ने इस कार्यशाला में उपस्थित प्रतिभागियों को हिन्दी में सरकारी कामकाज करने के लिए

प्रेरित किया और राजभाषा अधिनियम, नियमों और सरकारी आदेशों के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने भारत सरकार के राजभाषा विभाग को भेजी जाने वाली तिमाही रिपोर्ट्स को सही ढंग से भरने की भी जानकारी दी। सहायक निदेशक (राजभाषा) रमेश चंद ने कम्प्यूटर पर हिन्दी में कार्य करने एवं यूनिकोड फांटस तथा ऑनलाइन रजिस्ट्रेशन के बारे में अपना व्याख्यान विस्तार से प्रस्तुत किया।

इस एक दिवसीय कार्यशाला का समापन प्रधान आयकर आयकर आयुक्त श्री एच.सी. नेगी के अभिभाषण से हुआ। उन्होंने संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर चेतन सिंह का इस कार्यशाला के आयोजन में समिति के दिए गए सहयोग के लिए हार्दिक धन्यवाद दिया तथा राजभाषा के प्रयोग के लिए प्रतिभागियों को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि सरकारी कामकाज में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। संस्थान के कार्यकारी सचिव श्री प्रेम चंद ने इस कार्यशाला में प्रधान आयकर आयुक्त श्री एच.सी. नेगी का स्वागत किया और उपस्थित प्रतिभागियों से भारत सरकार द्वारा निर्धारित राजभाषा के प्रयोग के लक्ष्यों को पूर्ण करने की अपील की।

नराकास शिमला की दूसरी कार्यशाला जनवरी, 2016 में केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला में आयोजित की गई

इस कार्यशाला का शुभारंभ संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. विजय कुमार दुआ द्वारा किया गया। कार्यशाला में 56 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिसमें नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सदस्य कार्यालयों से 37 एवं संस्थान के वैज्ञानिक व अन्य अधिकारी वर्ग से 19 प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस कार्यशाला में मुख्य वक्ता के रूप में श्री प्रवीन चांदला, पूर्व सहायक निदेशक (राजभाषा), डॉ. रविन्द्र कुमार, वैज्ञानिक एवं श्री हीरा नन्द शर्मा, सहायक प्रशासनिक अधिकारी उपस्थित रहे। श्री चांदला ने अपने व्याख्यान में राजभाषा के प्रचार–प्रसार एवं संसदीय राजभाषा समिति की

प्रश्नावली को भरने की जानकारी दी, वहीं डॉ. रविन्द्र कुमार ने अपने व्याख्यान में विज्ञान में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग एवं कार्यान्वयन की कठिनाइयों एवं समाधान विषय पर पावर प्वाइंट के माध्यम से प्रेजेन्टेशन देकर समस्त प्रतिभागियों को मंत्रामुग्ध कर दिया। श्री हीरा नन्द शर्मा ने अपने व्याख्यान में 'सरकारी कार्य में हिन्दी का प्रयोग कैसे बढ़ाया जाए' नामक शीर्षक से प्रतिभागियों के मन में हिन्दी में कार्य करने के लिए जागरुकता पैदा की। कार्यशाला का संचालन डॉ. राकेश मणी शर्मा, प्रभारी (राजभाषा) द्वारा किया गया। कार्यशाला का समापन संस्थान के कार्यकारी निदेशक डॉ. विजय कुमार दुआ द्वारा किया गया। उन्होंने अपने समापन संबोधन में समस्त प्रतिभागियों से अपील की कि वे अपने दैनिक कार्यालयीन एवं प्रशासनिक कार्यों में अधिक से अधिक हिन्दी का प्रयोग करें।

नराकास शिमला के सदस्य कार्यालयों में

राजभाषा संबंधी गतिविधियां

भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, शिमला।

भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र में 28 सितंबर 2015 को हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह आयोजित किया गया। इस आयोजन में कार्यालय के सभी अधिकारियों, कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. एस सी. भारद्वाज, अध्यक्ष, क्षेत्रीय केन्द्र द्वारा की गई एवं समारोह का संचालन डॉ. सत्यबीर सिंह, सीटीओ एवं सदस्य सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति ने किया।

इस अवसर पर श्री रूपराम, निजी सहायक ने माननीय कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री, भारत सरकार, श्री राधा मोहन जी के हिन्दी चेतना मास, 2015 के संदर्भ में प्राप्त संदेश पढ़कर सुनाया। तत्पश्चात डॉ. हनीफ खान, वैज्ञानिक ने डॉ. एस. अय्यप्पन, सचिव एवं महानिदेशक, भारत सरकार, कृषि अनुसंधान और शिक्षा विभाग एवं भारतीय कृषि एवं अनुसंधान परिशद, कृषि मंत्रालय, कृशि भवन, नई दिल्ली से प्राप्त हिन्दी दिवस, अपील–2015 को पढ़कर सुनाया।

समारोह के अंत में डॉ. एस.सी. भारद्वाज जी ने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में गतवर्ष राजभाषा के क्षेत्र में किए गए कार्यालयी कार्यों, उपलब्धियों व अन्य प्रयासों पर विशेष चर्चा की। उन्होंने कहा हिन्दी पखवाड़े को सफल बनाने के लिए दिनांक 14 से 18 सितंबर 2015 तक केन्द्र के अधिकारियों व कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर हिन्दी में कार्य किया और नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा आयोजित हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं में भी भाग लिया। अध्यक्ष महोदय ने इन सभी कार्यों को अत्यधिक सराहा और सरल हिन्दी में अधिक से अधिक कार्य करने आवश्यकता पर बल दिया। समारोह का समापन डॉ. सत्यबीर के धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

केन्द्रीय विद्यालय जतोग छावनी, शिमला (हि.प्र.)

केन्द्रीय विद्यालय जतोग छावनी, शिमला में हिन्दी माह का आयोजन 01 सितंबर 2015 से आरम्भ हुआ।

01 सितंबर 2015 को प्राचार्य श्री मोहित गुप्ता ने हिन्दी माह का विधिवत शुभारम्भ किया। विद्यालय राजभाषा समिति की प्रभारी डॉ. पंकज कपूर ने हिन्दी माह को मनाने के उद्देश्य पर प्रकाश डालते हुए इस माह में आयोजित किये जाने वाले समस्त कार्यक्रमों, प्रतियोगिताओं, कार्यशाला और हिन्दी संगोष्ठी की जानकारी दी।

विविध सदनों द्वारा इस माह में समस्त कार्यक्रम हिन्दी में ही प्रस्तुत किए गए। प्रतिदिन प्रार्थना सभा में न केवल हिन्दी भाषा और राजभाषा हिन्दी से संबंधित लेख, कविताएं, पत्र वाचन तथा व्याख्यान प्रस्तुत किये गए बल्कि विज्ञान विषयों तथा पर्यावरण से संबंधित अनेक कार्यक्रम भी हिन्दी में ही आयोजित किए गए।

14 सितंबर को प्राचार्य श्री मोहित गुप्ता जी ने माँ वीणापाणी को पुष्पांजलि भेंट कर हिन्दी दिवस व पखवाड़े का शुभारम्भ किया तथा विद्यार्थियों को मोबाइल, कम्प्यूटर तथा सोशल मीडिया से संवाद साधते हुए देवनागरी लिपि का प्रयोग करने पर बल दिया।

15 सितंबर को साम्प्रदायिक सौहार्द व हिन्दी भाषा विषय पर नारा लेखन प्रतियोगिता करवाई गई। प्रत्येक कक्षा से उत्कृष्ट नारों को चयन किया गया तथा विजेता व उत्कृष्ट नारों को भित्ति पट्ट पर प्रदर्शित किया गया। प्राथमिक विभाग में इसी दौरान सुलेख प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 16 सितम्बर को वरिष्ठ वर्ग के लिए अंतःसदन आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। 18 सितम्बर को कनिष्ठ तथा वरिष्ठ वर्ग के लिए कविता पाठ प्रतियोगिता आयोजित की गई। 19 सितम्बर 2015 को छठी कक्षा से

बाहरवीं कक्षा तक विद्यार्थियों के लिए कक्षानुरूप चित्र कहानी लेखन प्रतियोगिता आयोजित की गई। वरिष्ठ वर्ग के लिए 21 सितम्बर 2015 को अंतःसदन प्रश्न–मंच प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रत्येक सदन से चार–चार प्रतिभागियों ने भाग लिया। 22 सितम्बर 2013 को समस्त कर्मचारियों तथा अध्यापकों के लिए प्रशासनिक शब्दावली, कार्यालयीय पत्र लेखन/टिप्पण लेखन तथा श्रुतलेख प्रतियोगिता आयोजित की गई। 23 सितम्बर 2015 को अंतःसदन कहानी कथन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें प्रतिभागियों ने उन्हीं कवियों व कवयित्रियों की वेशभूषा को धारण किया था जिनकी कविताओं के माध्यम से श्रोताओं को खूब हंसाया। प्राथमिक विभाग में आशुभाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। दोहा–चौपाई– कविता अंताक्षरी/अध्यापकों व कर्मचारियों हेतु स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिता 26 सितम्बर 2015 को करवाई गई। 28 सितम्बर 2015 को हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अतिथि सेवानिवृत सदस्य, डाक सेवा बोर्ड व जाने–माने कवि श्री तेज राम शर्मा द्वारा पुरस्कृत किया गया। उन्होंने विद्यालय द्वारा राजभाषा हिन्दी में किए जा रहे शत–प्रतिशत पत्राचार व लेखा–बहियों में भी प्रविष्टियां हिन्दी में किए जाने के लिए विद्यालय के प्रयासों की सराहना की। इस अवसर पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया। 30 सितम्बर 2015 को समस्त कर्मचारियों तथा अध्यापकों के लिए एक कार्यशाला का आयोजन किया गया।

भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, राष्ट्रपति निवास, शिमला

दिनांक 14 सितम्बर 2015 से संस्थान में हिन्दी दिवस, हिन्दी सप्ताह, हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी माह बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। यह समारोह संस्थान के सभी अध्येताओं, सह–अध्येताओं, अधिकारियों व कर्मचारियों की गरिमामयी उपस्थिति में सम्पन्न हुआ। 14 सितम्बर 2015 को आयोजित समारोह में संस्थान के कार्यकारी सचिव श्री प्रेम चंद ने अपने प्रारम्भिक भाषण में हिन्दी के सतत् विकास पर प्रकाश डाला और वर्तमान में प्रशासकीय हिन्दी की दशा और दिशा पर अपने विचार रखे। उन्होंने कहा कि संस्थान में विगत वर्षों से राजभाषा हिन्दी के व्यावहारिक प्रयोग में उत्तरोत्तर वृद्धि हुई है। संस्थान राजभाषा हिन्दी के विकास हेतु नियमित रूप से राजभाषा कार्यान्वयन समिति की आंतरिक बैठकें, कार्यशालाएँ आयोजित करता आ रहा है।

विगत दो वर्षों से संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह के निर्देशन में राजभाषा के प्रचार एवं प्रसार हेतु गृह–पत्रिका 'हिमांजलि' पूरे कलेवर के साथ प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका में हिन्दी के साथ–साथ पहाड़ी (हिन्दी) भाषा को यथोचित मंच प्रदान किया जा रहा है।

संस्थान के अध्येता व जाने–माने रंगकर्मी प्रोफेसर महेश चंपक लाल ने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में हिन्दी दिवस की शुभकामनाएं दी और कहा कि हिन्दी के विकास में रंगमंच ने तथा भारतीय रंगमंच के विकास में हिन्दी ने राष्ट्रभाषा के रूप में उत्कृष्ट भूमिका निभाई है। विभिन्न क्षेत्रों के रंगकर्म को समग्र राष्ट्र के परिप्रेक्ष्य में उजागर करने का एवं भारत की विविध भाषाओं के नाटकों को अनुवाद के माध्यम से भारतीय रंगमंच पर एक साथ लाने का श्रेय केवल हिन्दी भाषा को ही जाता है।

सह–अध्येता डॉ. लक्ष्मीकांत चंदेला ने हिन्दी को साम्प्रदायिक एकता की भाषा कहा है और कहा कि यह अपने प्रारंभ से ही साम्प्रदायिक सौहार्द के लिए प्रतिबद्ध रही है। डॉ. विनोद विश्वकर्मा ने कहा कि हिन्दी है तो हम हैं और हम हैं तो हिन्दी है। डॉ. अश्वनी कुमार ने हिन्दी को अभी भी उपेक्षित बताया और उन्होंने इसे समृद्ध बनाने की पहल पर बल दिया। डॉ. कमलेश सिंह नेगी ने कहा कि हिन्दी ने भारत के साथ पूरे विश्व को एकता के सूत्र में पिरोने का काम किया है। आज सम्पूर्ण विश्व में लगभग 1 अरब 10 करोड़ लोग हिन्दी बोलते और समझते हैं। डॉ. चमन लाल शर्मा ने हिन्दी के

राजनीतिकरण और उससे उत्पन्न दुदर्शा को रेखांकित किया। डॉ. पी.के. जैन ने कहा कि हिन्दी की छतरी के नीचे सभी भाषाओं को लाने की आवश्यकता है तभी हिन्दी अपने यथोचित स्थान को प्राप्त करेगी। डॉ. रमानाथ पाण्डे ने हिन्दी के अंतर्विरोधों की ओर इशारा किया। डॉ. दीपक ने हिन्दी के व्यावहारिक पक्ष को मजबूती से रखा और वर्तमान में उसकी प्रासंगिकता को उद्‌घाटित किया। संस्थान की आवासी चिकित्सा अधिकारी डॉ. मीनू अग्रवाल ने सभी अतिथियों, वक्ताओं एवं उपस्थित सभासदों का आभार माना।

हिन्दी पखवाड़े का अगला सुनहरा चरण माह सितम्बर 2015 के अंतिम सप्ताह के दौरान सम्पन्न हुआ इसमें हिन्दी निबंध लेखन, हिन्दी सुलेख एवं श्रुतलेख, प्रश्न–मंच, शब्द ज्ञान व अनुवाद, चित्र–कहानी लेखन, हिन्दी की स्वरचित एवं ख्यात नाम कवियों की कविताओं का पाठ, हिन्दी वाद–विवाद (स्वच्छता अभियान : एक कारगर मिशन' विषय पर) आदि विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। संस्थान के अध्येताओं व सह–अध्येताओं ने सक्रिय सहभागिता कर उल्लेखनीय योगदान दिया।

प्रतियोगिताओं के विजेताओं तथा प्रतिभागियों को सम्मानित करने के लिए दिनांक 20.11.2015 को संस्थान के संगोष्ठी कक्ष में विशेष पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। इस समारोह में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर चेतन सिंह ने अपने कर कमलों द्वारा प्रतियोगिताओं के विजेताओं, प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए।

समारोह का शुभारंभ हिन्दी अनुवादक श्री राजेश कुमार के स्वागत भाषण से हुआ। तत्पश्चात संस्थान के अध्येता तथा प्रतियोगिता आयोजन समिति के अध्यक्ष प्रोफेसर अच्युतन ने अपने विशिष्ट अभिभाषण में प्रसन्नता प्रकट करते हुए कहा कि संस्थान में लगातार हिन्दी का प्रयोग बढ़ रहा है। इसके लिए संस्थान के पदाधिकारी तथा कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

संस्थान के निदेशक, प्रोफेसर चेतन सिंह ने संस्थान द्वारा राजभाषा के प्रचार–प्रसारार्थ हेतु प्रकाशित हिन्दी पत्रिका 'हिमांजलि' के 11वें अंक के विमोचन भी किया। उन्होंने कहा कि यह पत्रिका संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों के लिए अपने विचार प्रकट करने का अच्छा मंच है और संपादक मण्डल का आह्वान किया कि आगामी अंक हेतु और संभावनाएं तलाशी जाएँ ताकि हिमांजलि, प्रकाशन जगत में एक मानक पत्रिका का रूप ग्रहण कर सके। उन्होंने प्रतियोगिताओं के विजेताओं और प्रतिभागियों को अपनी शुभकामनाएं भी दीं।

प्रसार भारती, आकाशवाणी शिमला

आकाशवाणी, शिमला में हिन्दी पखवाड़ा दिनांक 14 सितम्बर से 30 सितम्बर 2015 तक मनाया गया जिसे हिन्दी उत्सव का नाम दिया गया। पखवाड़े से पूर्व 7 सितम्बर तथा 13 सितम्बर 2015 को क्रमशः हिन्दी की सार्थकता तथा वैश्विक परिदृश्य में हिन्दी की स्थिति विषय पर एक वार्ता व परिचर्चा का प्रसारण किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान कुल चार प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें श्रुतलेख प्रतियोगिता विशेष रूप से बहुद्देशीय कर्मचारी वर्ग के लिए रखी गई। सभी प्रतियोगिताओं में अधिकारियों/कर्मचारियों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। हिन्दी पखवाड़े के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में सभी विजेताओं को महानिदेशालय द्वारा निर्धारित नकद राशि एवं प्रशस्ति प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया। समापन समारोह में मुख्य अतिथि के तौर पर दूरदर्शन के उपमहानिदेशक श्री ओम गौरी दत्त शर्मा को आमंत्रित किया गया था।

भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल, तारादेवी, शिमला

तैंतालीस वाहिनी, भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान राजभाषा के प्रचार–प्रसार हेतु हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का सफल आयोजन किया गया। 14 सितम्बर, 2015 को हिन्दी दिवस समारोह बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं में प्रथम,

द्वितीय तथा तृतीय स्थान पर आने वाले प्रतिभागियों को नकद राशि देकर सम्मानित किया गया। समारोह में राजभाषा अधिकारी द्वारा महानिदेशक महोदय द्वारा जारी की गई अपील को पढ़कर सुनाया गया तथा महानिदेशालय द्वारा जारी निर्देशों की जानकारी भी दी गई।

सेनानी महोदय ने सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को अपना सरकारी कामकाज अनिवार्यतः हिन्दी में ही करने की अपील की और कहा कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम 2015–16 में निर्धारित सभी लक्ष्यों को शत–प्रतिशत पूर्ण किया जाए। वाहनी के महत्त्वपूर्ण स्थानों पर हिन्दी में कामकाज को बढ़ाने एवं प्रचार–प्रसार करने के लिए विद्वानों के कथन संबंधी पोस्टर एवं बैनर आदि भी लगाए गए।

राष्ट्रीय सूचना–विज्ञान केन्द्र, हिमाचल प्रदेश

राजभाषा हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए दिनांक 14 दिसंबर 2015 को कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया गया जिसमें समिति के

सभी सदस्यों ने भाग लिया और एन.आई.सी. हिमाचल प्रदेश एवं समस्त अधीनस्थ कार्यालयों में हिन्दी के प्रयोग की समीक्षा की गई। उसी दिन एक हिन्दी कार्यशाला/संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस कार्यशाला के दौरान अपने अनुभागों एवं कार्यक्षेत्रों में हिन्दी के प्रगामी प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए चर्चा की गई। इस अवसर पर जिला केन्द्रों एवं अन्य कार्यालयों ने वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से भाग लिया। संगोष्ठी के दौरान श्री अजय सिंह चैहल, वरिष्ठ तकनीकी निदेशक एवं राज्य सूचना–विज्ञान अधिकारी ने उपस्थित अधिकारियों व कर्मचारियों से राजभाषा विभाग द्वारा जारी दिशा–निर्देशों का पालन करने की अपील की।

मुख्यालय दीपक परियोजना

मुख्यालय दीपक परियोजना में हिंदी दिवस/ पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े के दौरान हिंदी टिप्पण पत्र एवं सामान्य ज्ञान (हिंदी तथा हिंदीतर भाषी कर्मचारियों के लिए अलग–अलग, हिंदी कम्प्यूटर टाइपिंग तथा हिंदी भाषण प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। 14 सितम्बर 2015 को प्रतियोगिताओं के विजेताओं को मुख्य अभियंता के कर कमलों द्वारा पुरस्कार तथा प्रमाण पत्र वितरित किए गए। हिंदी दिवस के अवसर पर मुख्य अभियंता ने उपस्थित सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को कार्यालयीन कार्यों में राष्ट्रभाषा हिंदी के अधिकाधिक प्रयोग हेतु प्रेरित किया।

केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय, शिमला

हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय में 1 सितम्बर से 15 सितम्बर 2015 तक हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान प्रातःकालीन सभा में एक हिन्दी विचार श्रृंखला का आयोजन किया गया जिसकी प्रथम कड़ी में विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद कुमार सिंह ने अपने विचार व्यक्त किये। इस श्रृंखला में विद्यालय के रेक्टर श्री करमा सांगे, गैर हिन्दी भाषी शिक्षक श्री फूंसोग सेरिंग, श्री आनन्द, श्रीमती चन्दना बनिया, श्रीमती सेरिंग छोड़न एवं श्री घुप्तेन जंपा ने भाग लिया।

इस पखवाड़े के दौरान छठी कक्षा से आठवीं कक्षा तक तथा नौवीं से बारहवीं कक्षा तक के विद्यार्थियों के लिए अलग–अलग विषयों पर निबंध प्रतियोगिताएं करवाई गई। 14

सितम्बर 2015 को 'हिन्दी दिवस' के उपलक्ष पर एक अंतरसदनीय कविता पाठ प्रतियोगिता का भी आयोजन किया गया जिसमें बारहवीं कक्षा की कुमारी रुचिका शर्मा ने प्रथम, कुमारी अंकिता जोशी ने द्वितीय तथा दसवीं कक्षा की छात्रा कुमारी नैनसी गुप्ता ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। इस अवसर पर विद्यालय के शिक्षकों श्री हरेन्द्र कुमार सिंह और श्री गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय ने भी अपनी स्वरचित कविताओं का पाठ किया। साथ ही इस अवसर पर विद्यालय के प्राचार्य श्री विनोद कुमार सिंह ने विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार प्रदान कर सम्मानित किया। अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में प्राचार्य श्री विनोद कुमार सिंह ने राजभाषा हिन्दी के महत्व पर प्रकाश डाला और उपस्थित अध्यापकों, कर्मचारियों तथा छात्रों को हिन्दी दिवस की बधाई दी।

भारत सरकार मुद्राणालय, शिमला

प्रत्येक वर्ष की भांति इस वर्ष भी भारत सरकार मुद्रणालय में दिनांक 14.09.2015 से 28.09.2015 तक हिन्दी पखवाड़ा 2015 का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के समापन पर पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया जिस में पुरस्कार विजेताओं को कार्यालय की राजभाषा कार्यान्वयन समिति के अध्यक्ष श्री अनुपम सक्सेना ने नकद पुरस्कार प्रदान किए तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों से राजभाषा हिन्दी के भरपूर प्रयोग तथा प्रचार–प्रसार का आग्रह किया।

मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, शिमला

शिमला स्थित आयकर कार्यालयों में 1 से 15 सितम्बर, 2015 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। इस कार्य अवधि में हिन्दी की तीन प्रतियोगिताएं आयोजित की गई। प्रत्येक प्रतियोगिता के विजेताओं को क्रमशः 5000/–, 3000/–, 2000/– एवं 1000/– रुपये के प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय पुरस्कार दिए गए। पुरस्कार वितरण समारोह में मुख्य आयकर आयुक्त श्री राजेन्द्र कुमार जी ने कर्मचारियों से अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने की अपील की।

गिरीश शंकर, आई.ए.एस.
सचिव

भारत सरकार
राजभाषा विभाग
गृह मंत्रालय
तृतीय तल, एन.डी.सी.सी.-II भवन
जय सिंह रोड, नई दिल्ली-110001

सत्यमेव जयते

फाइल सं.14011/02/2011-रा.भा. (नीति)

26 फरवरी, 2016

विषय: सरकारी कामकाज में सुगम, सरल और सहज हिंदी का प्रयोग

प्रिय महोदय/महोदया,

आपको ज्ञात है कि संघ की राजभाषा हिंदी है। सरकारी कामकाज में हिंदी का प्रयोग और प्रचलन विगत दशकों में नि:संदेह बढ़ा है, किंतु हिंदी का पूर्णतः प्रयोग अभी भी नहीं हो रहा है। चूंकि संघ सरकार की राजभाषा हिंदी है अत: यह हमारा संवैधानिक दायित्व है कि हम अपने कामकाज में हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करें।

2. राजभाषा हिंदी के प्रयोग के मामले में जो बात बार-बार चर्चा का विषय बनती है, वह है सरल हिंदी का प्रयोग। आम बोलचाल की हिंदी के शब्दों को कार्यालयों के कामकाज में प्रयोग में लाया जाना चाहिए। हिंदी के सरल, सहज एवं सुस्पष्ट शब्दों का प्रयोग करके छोटे-छोटे वाक्यों का प्रयोग टिप्पणी लेखन एवं पत्राचार के लिए किए जाने से हिंदी के प्रति सबकी रुचि बढ़ेगी। सरकारी कामकाज में हिंदी सिर्फ अनुवाद की भाषा बनकर न रह जाए, इसलिए आवश्यक है कि मंत्रालयों/विभागों में उच्चतम स्तर पर सरल हिंदी का प्रयोग किया जाए, जिससे अनुभाग/प्रभाग स्वत: अपने कामकाज में मूल रूप से सहज हिंदी का प्रयोग करेंगे।

3. देश की सामासिक संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने के लिए हिंदी के विकास हेतु सरकार ने अनेक संस्थाएं बनाई हैं, जिनमें केंद्रीय हिंदी निदेशालय, वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग, केंद्रीय अनुवाद ब्यूरो, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान, विधायी विभाग आदि प्रमुख हैं। इनके माध्यम से सरकार ने प्रशिक्षण सामग्री तैयार कराने और प्रशिक्षण देने की व्यवस्था की है। सभी विषयों पर शब्दावली का निर्माण किया गया है तथा संहिताओं और नियम पुस्तकों का हिंदी अनुवाद सुलभ कराया गया है। इन संस्थाओं से भी यह आग्रह है कि आवश्यकतानुसार शब्दावली, अनुवाद और प्रशिक्षण आदि में हिंदी के सरल, सहज और सुगम शब्दों और रूप को प्राथमिकता दें।

4. सरकार के अधीन काम करते हुए सभी अधिकारियों/कर्मचारियों का दायित्व है कि सरकार द्वारा उपलब्ध कराई गई सुविधाओं का लाभ लेते हुए हिंदी की सरलता, सुगमता, सहजता और एकरूपता पर विशेष ध्यान देते हुए हिंदी में कार्य करें और आम बोलचाल की भाषा में मूल रूप से टिप्पणी एवं मसौदा लेखन को प्रोत्साहित करें।

5. अत: अनुरोध है कि सरकारी कामकाज में संघ की राजभाषा हिंदी का प्रयोग सुनिश्चित करते हुए इसके सरल, सहज और सुगम रूप पर विशेष ध्यान देने का कष्ट करें।

शुभकामनाओं के साथ,

आपका

(गिरीश शंकर)

नराकास (कार्यालय), शिमला द्वारा

कार्यालयध्यक्षों को पुरस्कार

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा प्रतिवर्ष उन कार्यालयध्यक्षों को पुरस्कार दिए जाते हैं जिनके कार्यालयों में वर्ष के दौरान राजभाषा का प्रयोग बढ़ाने के लिए सराहनीय प्रयास किए गए हों। वर्ष 2014–15 के लिए निम्नलिखित कार्यालयों को पुरस्कार प्रदान किए जा रहे हैं :–

बड़े कार्यालय

(25 से अधिक कर्मचारी)

क्रमांक	कार्यालय का नाम	स्थान
1.	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, शिमला	प्रथम
2.	चीफ पोस्ट मास्टर जनरल, शिमला	द्वितीय
3.	प्रधान महालेखाकार (ऑडिट), शिमला	द्वितीय
4.	उप–कमांडेंट केंद्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, शिमला	तृतीय
5.	दूरदर्शन केंद्र, शिमला	प्रोत्साहन

छोटे कार्यालय

(25 से कम कर्मचारी)

क्रमांक	कार्यालय का नाम	स्थान
1.	प्रधान आयकर आयुक्त, शिमला	प्रथम
2.	भारत सरकार मुद्रणालय, शिमला	द्वितीय
3.	राष्ट्रीय लेखा एवं लेखा परीक्षा अकादमी, शिमला	द्वितीय
4.	निदेशक, राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, शिमला	तृतीय
5.	क्षेत्रीय निदेशक, भारतीय वन सर्वेक्षण, शिमला	प्रोत्साहन

सोच-विचार करने में समय लगाएं, लेकिन जब काम का समय आए, तो सोचना बंद करें और आगे बढ़ें।

–नेपोलियन बोनापार्ट

नराकास शिमला द्वारा सितंबर, 2015 में आयोजित

विभिन्न प्रतियोगिताओं के परिणाम

हिंदी नोटिंग एवं ड्राफ्टिंग प्रतियोगिता
आयोजक : मुख्य आयकर आयुक्त कार्यालय, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री / सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	सुश्री पूनम सूद	प्रथम	केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान
2.	श्री पराग कुलश्रेष्ठ	द्वितीय	प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय
3.	श्री ओंकार नाथ मिश्र	तृतीय	श्रम ब्यूरो
4.	श्री कन्हैया कुमार	तृतीय	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
5.	श्री रामनुज कुमार	प्रोत्साहन	दीपक परियोजना
6.	श्री बलिस्टर सिंह	प्रोत्साहन	प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय
7.	श्री नीरज कुमार सिन्हा	प्रोत्साहन	मुख्य आयकर आयुक्त, कार्यालय
8.	श्री रमेश बी	प्रोत्साहन	भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

वाद-विवाद प्रतियोगिता
आयोजक : प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री / सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	श्री धीरज शर्मा	प्रथम	अधिशासी अधिकारी, छावनी परिषद, जतोग
2.	सुश्री प्रतिभा	द्वितीय	प्र. रा. प्रा. अ.सं., फागली, शिमला
3.	सुश्री पूनम वर्मा	तृतीय	उप डाकघर समरहिल, शिमला
4.	सुश्री अर्पणा रे	प्रोत्साहन	केन्द्रीय विद्यालय, जतोग छावनी
5.	सुश्री नीलू शर्मा	प्रोत्साहन	केन्द्रीय विद्यालय, जतोग छावनी
6.	श्री बलिस्टर सिंह	प्रोत्साहन	प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय, शिमला
7.	श्री ओंकार नाथ मिश्र	प्रोत्साहन	श्रम ब्यूरो, शिमला

सभी शक्ति तुम्हारे भीतर है, आप कुछ भी और सब कुछ कर सकते हैं। - स्वामी विवेकानन्द

प्रश्न मंच प्रतियोगिता
आयोजक : आकाशवाणी शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री / सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	श्री लक्ष्मीकांत व ओंकारनाथ मिश्र	प्रथम	श्रम ब्यूरो, शिमला
2.	श्री धर्मेन्द्र कुमार व प्रशात कुमार	द्वितीय	प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) शिमला
3.	श्री प्रवीण कुमार व श्याम सुन्दर	तृतीय	वन अनुसंधान संस्थान, शिमला
4.	श्री राजेश कुमार व अरुण कुमार	तृतीय	इन्दिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय, शिमला
5.	श्री हीरा नन्द शर्मा व चन्द्र मोहन बिष्ट	प्रोत्साहन	केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला

स्मरण शक्ति प्रतियोगिता
आयोजक : पासपोर्ट कार्यालय, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री / सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	श्री कुमार विशाल बाजीवान	प्रथम	श्रम ब्यूरो, शिमला
2.	श्री लक्ष्मीकांत	द्वितीय	श्रम ब्यूरो, शिमला
3.	श्री संजीव कुमार	तृतीय	केन्द्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, शिमला
4.	श्री राजेन्द्र सिंह राणा	प्रोत्साहन	केन्द्रीय न्यायालयिक विज्ञान प्रयोगशाला, शिमला
5.	श्री बलिस्टर सिंह	प्रोत्साहन	प्रधान आयकर आयुक्त कार्यालय, शिमला

आशु भाषण प्रतियोगिता
आयोजक : केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री / सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	श्री ओंकार नाथ मिश्र	प्रथम	श्रम ब्यूरो, शिमला
2.	सुश्री सरिता देवी	द्वितीय	केंद्रीय विद्यालय, जतोग छावनी
3.	सुश्री पूनम वर्मा	द्वितीय	उप डाकघर, समरहिल, शिमला
4.	सुश्री पूजा कुमारी	तृतीय	केंद्रीय विद्यालय, जतोग छावनी
5.	श्री चन्दा राम	तृतीय	केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला

इंसान तब समझदार नहीं होता जब वो बड़ी-बड़ी बातें करने लगे,
बल्कि समझदार तब होता है जब वो छोटी-छोटी बातें समझने लगे।

नारा लेखन प्रतियोगिता
आयोजक : केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री / सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	सुश्री अपर्णा रे	प्रथम	केंद्रीय विद्यालय, जतोग छावनी
2.	सुश्री मृदुला सूद	द्वितीय	महालेखाकार कार्यालय, शिमला
3.	श्री देवराज	तृतीय	केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला
4.	श्री तरविन्दर कोछड	प्रोत्साहन	केंद्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, शिमला
5.	सुश्री नीलू शर्मा	प्रोत्साहन	केन्द्रीय विद्यालय जतोग छावनी

चित्र लेखन प्रतियोगिता
आयोजक : भारतीय वन सर्वेक्षण विभाग, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री / सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	श्री प्रवीण कुमार	प्रथम	हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
2.	सुश्री अदितिका ठाकुर	द्वितीय	महालेखाकार (लेखा व हकदारी) कार्यालय
3.	श्री भगत राम शर्मा	तृतीय	जनगणना कार्य निदेशालय, शिमला
4.	श्री प्रेम सागर	तृतीय	भारत तिब्बत सीमा पुलिस, तारादेवी शिमला
5.	श्री हेमन्त कुमार	प्रोत्साहन	भारतीय वन सर्वेक्षण, शिमला
6.	सुश्री अर्चना नाहर	प्रोत्साहन	जनगणना कार्य निदेशालय, शिमला

निबन्ध प्रतियोगिता
आयोजक : चीफ पोस्ट मास्टर जनरल, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री / सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	सुश्री नीता शर्मा	प्रथम	चीफ पोस्ट मास्टर जनरल, शिमला
2.	श्री हरिवंश गलाना	द्वितीय	चीफ पोस्ट मास्टर जनरल, शिमला
3.	श्री लीला दत्त	तृतीय	केंद्रीय विद्यालय, जतोग, शिमला
4.	श्री हमेन्द्र कुमार शर्मा	तृतीय	चीफ पोस्ट मास्टर जनरल, शिमला
5.	श्री वेद प्रभा मेहता	प्रोत्साहन	जवाहर नवोदय विद्यालय, ठियोग, शिमला
6.	श्री राजेन्द्र कुमार तिवारी	प्रोत्साहन	दीपक परियोजना, लेखा कार्यालय, शिमला

कविता पाठ प्रतियोगिता
आयोजक : दूरदर्शन केंद्र, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री/सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	श्री प्रशांत कुमार	प्रथम	प्रधान महालेखाकार (ऑडिट) शिमला
2.	श्री गुप्तेश्वर नाथ उपाध्याय	द्वितीय	तिब्बतन स्कूल, शिमला
3.	सुश्री प्रिया मित्तल	तृतीय	दीपक परियोजना, (लेखा कार्यालय) शिमला
4.	सुश्री नीलू शर्मा	तृतीय	केंद्रीय विद्यालय, जतोग
5.	सुश्री यामिनी	प्रोत्साहन	दूरदर्शन केन्द्र शिमला,
6.	सुश्री नलिनी	प्रोत्साहन	दूरदर्शन केन्द्र शिमला,
7.	श्री राकेश कुमार सिंह	प्रोत्साहन	भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

शब्द ज्ञान/ अनुवाद प्रतियोगिता
आयोजक : भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री/सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	श्री राजीव कुमार गर्ग	प्रथम	लेखा कार्यालय दीपक परियोजना
2.	श्री हरीश जोशी	द्वितीय	रा.प्र.स.का. (क्षे. सं. प्र.)
3.	श्री कुमार विशाल बाजीवान	द्वितीय	श्रम ब्यूरो, शिमला
4.	श्री कमल किशोर शर्मा	तृतीय	भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान
5.	श्री अनिल शर्मा	प्रोत्साहन	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
6.	श्री अजय सैणी	प्रोत्साहन	श्रम ब्यूरो, शिमला

कम्प्यूटर पर हिन्दी टाइप प्रतियोगिता
आयोजक : राष्ट्रीय लेखा तथा लेखापरीक्षा अकादमी, शिमला

क्र.सं.	प्रतिभागी का नाम सर्वश्री/सुश्री	स्थान	कार्यालय का नाम
1.	श्री रोहित कुमार	प्रथम	हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान
2.	श्री अनिल शर्मा	द्वितीय	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन
3.	श्री शक्ति चंद	तृतीय	राष्ट्रीय लेखा तथा लेखा परीक्षा अकादमी
4.	श्री भगत राम	प्रोत्साहन	राष्ट्रीय लेखा तथा लेखा परीक्षा अकादमी

नराकास शिमला द्वारा आयोजित स्लोगन लेखन प्रतियोगिता के

कुछ स्लोगन

अपर्णा रे,
केन्द्रीय विद्यालय, जतोग

हो आजादी सार्थक तभी
जब राजभाषा अपनाएं सभी,
न हो राजभाषा का अपमान
करें आजादी का सभी सम्मान।

भ्रूण हत्या है अविकल संहार
न करें, ऐसा प्रहार
आने तो दें उसे एक बार
देखें कैसा है ये उपहार

देश की प्रतिभा, विदेश की गरिमा
ये प्रतिभा की कैसी महिमा
क्यूं न बन पाएं देश का गौरव
क्यूं न बन पाएं माटी का सौरभ

स्वच्छता हो हम सब की अभिलाषा
स्वच्छता हो हम सब की परिभाषा

तरविंदर कोछड़
केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान

हिन्दी भाषी हम कहलाते, हिन्दी है राजभाषा
समग्र भारत हिन्दीमय हो, बन्ध न सकी यह आशा
संस्कृत जैसी जननी इसकी, खड़ी, अवधी, बृज बहनें
कमी कौन सी इस भाषा में, जो लगी है यह ढहने

कूड़ा करकट न फैलायें
स्वच्छता को हम अपनायें।

देवराज
केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान

आजादी के 68 वर्ष भारत के हो गये
राजभाषा को छोड़ कर सब अंग्रेजी में खो गये

नीलू शर्मा
केन्द्रीय विद्यालय, जतोग

जन–जन की भाषा को प्रयोग में लाना है।
सरकारी कार्यों को सहज सुगम बनाना है।

अनुपमा गुलेरिया

विद्यार्थी से लेकर सरकारी कर्मचारी तक,
सब की है ये मौलिक जिम्मेदारी।
राजभाषा ही प्राथमिकता हो हमारी।

प्रवेश जस्सल

है कितना आराम तब से
हुआ हिन्दी में काम जब से

विनोद कुमार

रहे स्वच्छता स्वच्छ रहेंगे हम।
नहीं रहेगा बीमारियों का गम।

तिलक राज

न भागो गांव छोड़कर, न भागो भारत छोड़कर
अपनी प्रतिभा को यहीं रखो भारत मां के चरणों पर।

भारत देश हमारा, दो स्वच्छता का नारा।
करो लोगों की जिंदगी से, गंदगियों का छुटकारा।

आँसू

विजयलक्ष्मी ठाकुर, सहायक लेखा अधिकारी
महालेखाकार कार्यालय, शिमला

पल–पल बदलती ज़िन्दगी
इस पल खुशी
दूसरे ही पल आँसुओं
में तबदील होती ज़िन्दगी।

क्यूं इस खुशी और आँसुओं
की वजह ही कोई अपना होता है
अपनों का साथ खुशी
अपनों से बिछुड़ना आँसू।

इन आँसुओं को तो बहना ही है
खुशी में मोती की तरह
गम में एकमात्र साथी
हमेशा साथ देते हैं ये आँसू।

जब ज़ुबान खामोश हो जाती है
लफ्ज़ कमजोर पड़ जाते हैं
तो यही आँसू एहसास दिलाते हैं
दिल की ज़ुबान हैं ये आँसू।

कभी खुशी के पल याद करके
बहते रहते हैं निरंतर
शायद किसी अपने के
खोने के दर्द को बयां करना
कभी इतना सहज नहीं होता
यह आँसुओं की ज़ुबान
सब कह जाती है खामोशी से।

कभी मिलन के आँसू
कभी जुदाई के आँसू
कभी प्रेम तो कभी विरह
हर अहसास को सहजता
से बयां करते आँसू।

अपना एक सहारा सा
महसूस होते हैं यही आँसू
बहुत कुछ कह जाते हैं
बहुत कुछ समझा जाते हैं
ये आँसू।

रूह की खेती लहलहा रही है

डॉ. राजेश्वरी गौतम, हिंदी अनुभाग
चीफ पोस्टमास्टर जनरल कार्यालय, हि.प्र. परिमंडल, शिमला

यह कैसी भोर हुई है आज,
सांझ की स्मृति ही नहीं रही।
लगता है,कभी सांझ होगी ही नहीं,
इस भोर की....स्वयं में एक अपवाद ।
कैसी विचित्र सुखद अनुभूति है यह !

सोचती हूं, मैंने तो सारी खिड़कियां, दरवाज़े,
बंद कर रखे थे सदियों से......,
पर्दे भी खासे मोटे थे...सब ओर से महफूज।
फिर यह कैसा झोंका आया सहसा,
सुवासित सा,धीरे–धीरे दबे पांव,खोल गया
मेरी खिड़कियां–दरवाजे,बिना पूछे,
सब पर्दे इधर–उधर हो गये,
और.........समा गया वह प्यारा हवा का झोंका
सीधे मेरी रुह में।

और अब,मेरी रुह निर्लेप नहीं रही,
प्रकाशित हो गयी है, हरी–भरी हो गयी है,
अजब सी प्रसन्नता घेरे रहती है,
मेरे धीर गंभीर ह्रदय को..........,
सर्वत्र आनंद–आनंद–परमानंद !

रंग–बिरंगी भावनाओं के फूल खिल रहे हैं,
मेरी सूखी पड़ी रुह में,
सुवासित हो रही हूं मैं,
अजब ऊथल पुथल कर गया,
वह हवा का झोंका ....।

मैं समझ नहीं पाती हूं,जान नहीं पाती हूं,
यह क्या हो गया है मुझे,
पिघलती जा रही हूं मैं,
सारे प्रतिबंध बगावत सी कर रहे हैं,
सांस लेना चाहती है मेरी आत्मा खुले आकाश में।

हैरान हूं मैं, कभी सोचा नहीं था,
निर्लिप्त कही जाने वाली आत्मा,
इतनी ऊर्वर,इतनी हरी– भरी हो सकती है,
इतनी प्यासी थी यह जन्म–जन्म से।
एकाएक सप्राण होकर लहलहा उठी है मेरी आत्मा।

अब मैं इसे बंजर नहीं होने दूंगी ....
मेरी आत्मा की खेती को जीवन दे दिया है ,
इस प्यारे से हवा के झोंके ने।

भीनी–भीनी खुशबू फैल गयी है मेरे अंतर्मन में,
हवा का यह झोंका अनूठा है, हवा की तरह स्वछंद नहीं,
चिरस्थायी है यह, इसे भी तलाश थी युगों से,
मेरे भीतर सोयी पड़ी चमेली की महक की,
कभी न ढ़लने वाली भोर हो गयी है,
सब उज़ला–उज़ला सा है,कभी न मिटने वाला,
सच है,यह भोर अनंत है, अनंत है, अनंत है !!!

क्षणिकाएं

रविन्द्र भण्डारी, निजी सहायक
निदेशक, डाक सेवाएं, हिमाचल प्रदेश

नसीब के खेल से कभी निराश मत होना
ज़िन्दगी से कभी उदास मत होना
हाथों की लकीरों पर मत करना भरोसा
नसीब तो उनके भी होते हैं, जिनके हाथ नहीं होते।

रख भरोसा कि राह में ही राह होती है
इरादे गर पक्के हों, तो मंजिल पास ही होती है।

न बनना कभी कवि
नहीं तो पछताएगा
गर कविता नहीं बिकी

हिंदी किसी एक प्रदेश की भाषा नहीं बल्कि देश में सर्वत्र बोली जाने वाली भाषा है -विलियम केरी

कागज़ के रिश्ते

दीपक कुमार, वैज्ञानिक अधिकारी
जिला शिमला

सुना था दिलो–धड़कन में बसा करते थे रिश्ते।
कभी प्रेम प्रतीक भी हुआ करते थे सुनहरे रिश्ते।।

अनमिट से कुछ युग–युग के रंग–बिरंगे थे रिश्ते।
रिश्तों पर जीवन टिकता था जीवन से बड़े थे रिश्ते।।

कुछ पलकों पर सजें तो कुछ यादों में सिमटे रिश्ते।
जीवन एक, अनेक रिश्ते, रिश्तों की जान स्वयं रिश्ते।।

आज मगर बे–मतलब क्यों मजहब पर हम डटे हुए।
चंद कागज़ के टुकड़ों पर क्यों रिश्ते निर्दोष हैं बंटे हुए।।

गंगा बहती सरहद पर खूनों की, क्या धूम मची है गश्तों की।
न जाने कब इन नदियों में अब नाव चलेगी रिश्तों की।।

कीमत नहीं मानवता की जो रिश्ते आज बेमोल हुए।
बे–परवाह इस दुनिया में कुछ रिश्ते आज मखौल हुए।।

रिश्ते भी झूठे लगने लगे बस धन दौलत की चाह जहां।
सपने कागज़ पर बिकते हैं अब कागज ही अनमोल हुए।।

आँखों से अश्क निकलते हैं अब क्या करना है जन्नत में।
जब माँ को भी बांट दिया इन्सानों के इस मजहब ने।।

सुना था दिलो–धड़कन में बसा करते थे रिश्ते।
कभी प्रेम प्रतीक भी हुआ करते थे सुनहरे रिश्ते।।

हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्रोत है
–सुमित्रानंदन पंत

रोज़गार और शादी

राकेश कुमार सिंह, लेखा अधिकारी
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

रोज़गार और शादी का है चोली–दामन का साथ,
मिल गई ग़र नौकरी तो समझो चल पड़ी बारात।

मेरा एक प्यारा मित्र है,
जिसका अच्छा चरित्र है,
यूं तो है वो एम.ए. पास,
पर बेरोज़गारी के कारण है उदास।
नौकरी की वह देख रहा था राह,
नहीं थी शादी की उसे परवाह।
एक दिन मैं उससे बोला,
ले आ अब तू भी किसी का डोला।

वह बोला– ओ भाई....!
यह तुम क्या पढ़ रहे हो,
शादी की बात कर,
क्यों दुखती नस पर हाथ धर रहे हो।

बेरोजगारी और शादी का नहीं है कोई मेल।
रोजगार के बिना नहीं चलती जीवन की रेल।
वह बोला जब मुझे कोई नौकरी मिल जाएगी
तो मेरी दुल्हन भी आ जाएगी।
शादी की बात वह यूं ही गया टाल
वक्त बीतता गया उम्र हो गई 38 साल।

उसके माता–पिता भी तंग हो आये थे
बेटा कुंवारा न रह जाये, इस सोच में घबराए थे।
एक दिन वह आ पहुंचा मेरे घर
श्रीमती जी से बोला–भाभी अब तू ही कुछ कर।
ढूंढ दे एक लड़की कुंवारी
जो हो सारे जग से न्यारी।

बोली श्रीमती जी–
है ये लड़की 48 वर्ष की कुंवारी
देख रही है वह भी वर की राह बेचारी
कहो तो उससे बात चला दूं
तुम्हारे भाई को नई भाभी ला दूं
ऐसे हुआ था मेरे मित्र का रिश्ता
श्रीमती जी बनी उस बेचारे का फ़रिश्ता

आपसे भी मेरा बस यही है निवेदन
शादी के लिए आज ही कर दो आवेदन।

विचित्र चलचित्र

ज्योत्स्ना नौटियाल
केन्द्रीय विद्यालय, जतोग छावनी, शिमला

जीवन के इस चलचित्र में,
समय निर्बाध ही तो चलता है,
उम्र की हर दहलीज को पार करते हुए,
चलचित्र के रूपहले पर्दे पर।

उम्र के हर पड़ाव में नया रूप देखते हैं,
वही चलचित्र वही परिदृश्य
वही पार्श्वसंगीत, वही हलचल,
वही रंगमंच, वही रंगकर्मी।

पर समय का निर्बाध प्रवाह,
हमारी सोच से
नित नया संदेश देता है,
सड़कों पर चलती नित नई,
पर एक जैसी भीड़,
अरे! ये क्या?

बचपन में तो ये बच्चे मुझे
अपने खेलकूद के साथी,
बड़े, अंकल–आंटी,
बुजुर्ग, दादा–दादी व नाना–नानी लगते थे,
वही युवा अवस्था में
बच्चे लगते अबोध।

युवा अवस्था में अपनत्व का गर्व,
टक्कर लेने वाले प्रतिद्वंदी
अपनी सी अकड़ रौब का सामना
करने को तैयार
और अधेड़ों को तो
निःसहाय व बेचारा समझते।

अरे! यह क्या?
वही परिदृश्य
वही रंगमंच, वही सब कुछ।
उम्र के साथ दृष्टिकोण का
परिवर्तन का दौर।

आज अधेड़ की उम्र में आए तो
बच्चों के लिए कुछ नया करने का जज्बा,
युवाओं को हरदम कुछ नया बताने का मन,
बुजुर्गों की अँगुली थामने का दिल।

वहीं अधेड़ उम्र के साथियों से
अपनी बात बांटने का मन कर,
दिल भर आया।

यह उम्र का तकाज़ा है या
दृष्टिकोण का असर,
बदलते समय का किस्सा है,
या फिर जीवन का नया हिस्सा है।

क्षणिकाएं

अनुपम सक्सेना
भारत सरकार मुद्रणालय, शिमला

आज भी ...
आज भी लगता है
कि वक्त के किसी मोड़ पर
एम लम्हा मेरा इन्तज़ार कर रहा है ...
एक मासूम से लम्हे का इन्तज़ार
मुझे लौट आने को कहता है
एक खामोश सा लम्हा
गीत बन मेरा साथ देता है
एक उदास सा लम्हा
अश्क बन कर हर तस्वीर धुंधली कर देता है
एक वीरान सा लम्हा
सूखे पत्तों से ढकी इन राहों पर मेरे पीछे चलता है
एक मुस्कान सा लम्हा
मुझे तुम्हारी याद दिला देता है
एक अधूरा सा लम्हा है
ज़िंदगी ...
लौट आओ ना ...

मैं 'शून्य' भी न हो सका

प्रेम सागर
भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल
तारा देवी, शिमला

हम एक छोर से, साथ उड़े थे
तुम बादल बन गए, और ....
मैं वाष्प भी न हो सका
तुम घटा बनकर बरस गए, और ....
मैं बूंद भी न बन पाया
मैं जल भी न हो सका

हम एक झरने से, साथ गिरे थे,
तुम दरिया बनकर बह गए, और .....
मैं इक लहर भी न हो सका,
तुम बहते–बहते 'सागर' हो गए, और ....
मैं किनारों में उलझकर रह गया।

हम एक डाल पर साथ उगे थे,
तुम फूल बनकर खिल गए, और .....
मैं कांटा भी न हो सका
तुम टूट कर किसी की शान हो गए, और ....
मैं साख भी न बन पाया छाल भी न हो सका।

हम एक मजार पर, साथ बैठे थे,
तुम बैठे–बैठे घरौंदा हो गए, और....
मैं तिनके भी न हो सका
तुम आत्मा और परमात्मा, दोनों साथ हो गए, और ...
मैं न बीज बन पाया, न जीव हो सका

हम एक राह में साथ पड़े थे
तुम लुड़कते–लुड़कते, राहगीर बन गए, और .....
मैं एक कंकड़ भी न हो सका
तुम चलते–चलते, सावन हो गए, और ......
मैं न रेगिस्तान बन पाया, और ....
न ही बंजर हो सका।

इस ब्रह्माण्ड में, साथ विघटित हुए थे
तुम बिखरते हुए भी, वसुंधरा हो गए, और ...
मैं एक कण भी न हो सका
तुम पहाड़, नदिया, पवन सब हो गए, और ...
मैं, मैं भी न बन पाया,
और शून्य भी न हो सका.... क्योंकि

तुम, तुम बन गए थे
मैं को जाना ही नहीं,
तू में समर्पण करना आ गया, और ...
मैं, मैं की जिद्द पर अड़ा रहा
जो आज मुझको ही खा गया।

शील और सत्य ही आत्मा हैं

संत सुकरात सत्य और सदाचार को सर्वोपरि धर्म बताया करते थे। उनका मत था कि बड़े–से–बड़ा संकट आने पर भी मानव को सत्य व न्याय पर अटल रहना चाहिए। यदि सामने काल भी खड़ा हो तो डरकर सत्य का त्याग कदापि नहीं करना चाहिए।

सुकरात की तेजस्विता व निर्भीकता देखकर गलत कर्मों में लगा वर्ग उनका विरोधी बन गया। उन्हें सत्य से विचलित करने के लिए धमकियों का सहारा लिया गया, लोभ–लालच दिए गए। इसके बावजूद वे सत्य पर अटल रहे, तो उन पर भ्रामक आरोप लगाकर मृत्युदंड सुना दिया गया। निर्णय दिया गया कि उन्हें जहर पिलाकर मार डाला जाए। जहर पिलाने की तिथि घोषित कर दी गई। सुकरात के अनुयायी भक्त उनके पास पहुंच गए। उनकी आँखों से अश्रुधारा बहने लगी। सुकरात को पिलाने के लिए जहर पीसा जा रहा था। वह जहर पीसने वाले के पास पहुँचे तथा बोले, 'लगता है, तुमने कभी जहर नहीं पीसा है। जल्दी–जल्दी पीसकर मुझे पिलाओ, जिससे पास बैठे लोगों का रोना बंद हो जाए।

सुकरात को प्याले में भरकर जहर पिलाया गया। कुछ देर बाद वे बोले, 'जहर का प्रभाव दिखाई देने लगा है। हाथ पैर सुन्न और निर्जीव होने लगे हैं, परंतु मित्रो! यह जहर मेरे भीतर के शील व सत्य का बाल भी बांका नहीं कर सकता। शील व सत्य ही तो मेरी आत्मा है। आत्मा अमर है, उसे यह कैसे मारेगा?' यह कहते कहते संत सुकरात शांत हो गए। उनके अनुयायी उनकी निर्भीकता देखकर नतमस्तक हो उठे।

अपना अपना महाभारत

डॉ. पंकज क
केन्द्रीय विद्यालय जतोग, शिम

अरण्य झुरमुट में खड़ा
हर वृक्ष एकदम एकाकी
गुमसुम प्रतिपल झेल रहा है
प्रकृतिकृत व मानवनिर्मित
कष्टों व तानहों को

इन्हीं के ताने-बाने में
अंदर ही अंदर, कहीं न कहीं
बुन रही है मकड़ी सदृश्य
अपना ही जाल
जैसे-जैसे फैलता जाता है
यह जाल, उलझता ही जाता है
और गहरे अंतर्मन तक

यूं तो तूफान का हर झोंका
अरण्य झुरमुट में खड़े
हर वृक्ष को आंदोलित करता है
पर सभी का अपना-अपना
है कुरुक्षेत्र
है अपना-अपना महाभारत

इस आंदोलन में कोई तो घुटता है
कोई उत्तेजित हो जाता है
कोई अर्जुन बनता है तो
कोई बनता है कर्ण

कोई तो अभिमन्यु-सा, चक्रव्यूह में
धराशाई हो जाता है
सफल वही होता है जिसे
मिलता है कृष्ण सा सारथी

हर वृक्ष को कहां मिल पाता है कृष्ण
कर्ण-सा वीर और सर्वस्व लुटाने वाला होकर भी
अभिमन्यु सा निडर व रणकुशल योद्धा भी
कृष्ण के अभाव में हार ही जाता है
अपना महाभारत

काश! अरण्य झुरमुट में खड़े
हर एकाकी वृक्ष को मिल पाता
एक–एक कृष्ण
तो प्रत्येक अर्जुन

निष्काम कर्मण्यता से परिपूर्ण हो
वासांसी जिर्णाय यथा विहाय
को ग्रहण कर
निःसंदेह जीत ही जाता
अपना–अपना हर महाभारत

राजभाषा पुरस्कार

राष्ट्रीय सहकारी विकास निगम, शिमला कार्यालय को राजभाषा के प्रयोग के लिए राजभाषा विभाग से प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ है। यह पुरस्कार पंजाब एवं हरियाणा के राज्यपाल महामहिम श्री कप्तान सिंह सोलंकी जी ने अमृतसर में आयोजित राजभाषा सम्मेलन में श्री तेज मोहिन्द्र सिंह, निदेशक को प्रदान किया।

मैं उन लोगों में से हूँ, जो चाहते हैं और जिनका विचार है कि हिन्दी ही भारत की राष्ट्रभाषा हो सकती है।

– लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक

धन का सदुपयोग

धर्मशास्त्रों में कहा गया है कि धन का सदुपयोग या तो जरूरतमंदों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने में अथवा अपने परिवार व समाज के लिए मर्यादापूर्वक उपभोग करने में निहित है। जो व्यक्ति कृपण होता है, उसका धन मिट्टी–पत्थर के समान पड़ा रह जाता है। ऐसा धन असीम दुःख का कारण भी बनता है।

आदि गुरु शंकराचार्य जी ने कहा था, 'दान संविभाग' अर्थात् संपत्ति का सम्यक् विभाजन ही दान है। बाइबिल में कहा गया है कि वैसा दान ही सार्थक होता है, जिसमें दाएं हाथ से दिए गए दान का पता, बाएं हाथ को भी न चले।

माघ जितने बड़े कवि थे, उतने ही बड़े दानी। अपने दरवाजे पर आने वाले याचक को दान देने से उन्हें संतोष मिलता था। एक दिन राजा ने राजसभा में उनके द्वारा रचित काव्य की पंक्तियां सुनकर उन्हें इनाम के रूप में धन दिया। उन्होंने तमाम धनराशि रास्ते में याचकों को बांट दी। घर पहुंचे, तो द्वार पर भी याचक खड़ा था। उसे देने के लिए उनके पास कुछ नहीं बचा था। याचक ने आंखों में आंसू भरकर कहा, 'मेरी बूढ़ी माँ बीमार है। दवा के लिए भी पैसे नहीं हैं।'

माघ ने सुनते ही द्रवित होकर प्रार्थना की, 'हे मेरे प्राण, इस विवशता में आप स्वयं मुझे छोड़ चलिए। आत्महत्या पाप है, अन्यथा मैं प्राण त्याग देता।'

अचानक उनका एक मित्र पहुंचा। वह देखते ही सब समझ गया। उसने अपनी जेब से मुद्रा निकाली और याचक को दे दी।

माघ ने मित्र में भी भगवान के दर्शन किए, जिसने उनकी लाज बचा ली।

बलि प्रथा अधर्म है।

ढाई सौ वर्ष पूर्व कुरुक्षेत्र में जन्मे योगिराज वनखंडी महाराज परम विरक्त व सेवा भावी संत थे। उन्होंने दस वर्ष की आयु में ही उदासीन संप्रदाय के सिद्ध संत स्वामी मेलारामजी से दीक्षा लेकर समस्त जीवन धर्म व समाज के लिए समर्पित करने का संकल्प लिया। एक बार पटियाला के राजा कर्मसिंह संत वनखंडी को अपने राजमहल में ले गए। जब उन्होंने उनसे रात को महल में ही निवास करने का आग्रह किया, तो वनखंडी महाराज ने कहा, 'साधु को किसी भी गृहस्थ के घर नहीं ठहरना चाहिए।' राजा के हठ को देखकर वे रुक गए और आधी रात को चुपचाप महल से निकलकर वन में जा पहुँचे।

संत वनखंडी एक बार तीर्थयात्रा करते हुए असम के कामाख्या देवी के मंदिर के दर्शनों के लिए पहुंचे। उन्हें पता चला कि कुछ अंधविश्वासी लोग देवी को प्रसन्न करने के नाम पर निरीह पशु–पक्षियों की बलि देते हैं। कभी–कभी कुछ दबंग व धनी लोग व्यक्तिगत हित साधने के लिए नरबलि जैसा पाप कर्म करने से भी बाज़ नहीं आते। वनखंडी महाराज ने निर्भीकतापूर्वक सभी के समक्ष कहा, 'सभी प्राणिजन देवी माँ की संतान हैं। माँ करुणामयी होती है, वह किसी की बलि से खुश कैसे हो सकती है।' उसी दिन से सभी ने संकल्प लिया कि नरबलि जैसा घोर पाप कर्म कभी नहीं होगा।

वनखंडी जी सिंध–सक्खर पहुंचे। वहां उन्होंने सिंधु नदी के तट पर उदासीन संप्रदाय के साधुबेला तीर्थ की स्थापना की। यह तीर्थ उनकी कीर्ति का साकार स्मारक है।

क्या तुम सच में बुरी हो

पूजा कुमारी ठाकुर
केन्द्रीय विद्यालय, जतोग

सब कहते हैं तुम बुरी हो,
क्या तुम सच में बुरी हो ?

लक्ष्य प्राप्ति के रास्ते सुझाती हो,
हंसाने के लिए थोड़ा बहुत रूलाती हो,
तो क्या तुम सच में बुरी हो?

क्या सही, क्या गलत, कौन अच्छा, कौन बुरा,
ये समझाती हो,
तो क्या तुम सच में बुरी हो ?

बुरी हो तो सही,
तुम हमें सोना जो बनाती हो,
सबके बदले अंदाज और तुम्हारा वही स्वभाव

खुशी के आने पर,
गहरी सांसों का अहसास दिलाती हो,
तो क्या तुम सच में बुरी हो ?

किसी भी हद तक जूझने का हौंसला बंधाती हो,
जिन्दगी के भंवर में तैरना सिखाती हो,
तो क्या तुम सच में बुरी हो ?

हाँ होगी बुरी उनके लिए
जो जिंदगी के थपेड़ों से डरते हैं,
मुझे हंसाने के लिए बुरी बनी तुम
मेरी जीवन साथी हो,

तुम बुरी हो तो बुरी ही सही,
पर मुझे तुम बुरी नहीं हो।

राष्ट्रीय व्यवहार में हिन्दी को काम में लाना देश की उन्नति के लिए आवश्यक है। - महात्मा गांधी

सूरज

कुमार विशाल बाजीवान,
आर्थिक अधिकारी, श्रम ब्यूरो, शिमला

सुबह–सुबह उजियाला और लालिमा लेकर
पूरब से तू आता है
शाम को फैला अंधकार जगत में
पश्चिम में तू छिप जाता है
दिन और रात होते तुझसे,
तुझसे ही है सुबह और शाम
न तू हो तो निष्क्रिय संसार,
कर न पाएं हम कुछ भी काम
तेरे कारण होती सर्दी–गर्मी
तुझसे ही बसंत और बरसात
इस जग को रखे उजियारा
चाँद और तारे मिलकर तेरे साथ
लेकर जल इस जग से सहर्ष
कर वर्षा हरा–हरा बाग खिलता है
अगर रूष्ट हो जाए जो
इस जग में अकाल फैलाता है
तू ही जल देता किसान को
तब जाकर पेट देश का भरता है
दे धन–धान्य मानव को
संसार को समृद्ध करता है।

सत्यवादी, कर्मठ, स्वाभिमानी और पवित्र हृदय वाला व्यक्ति निर्धन होने पर भी श्रेष्ठ गिना जाता है।

क्यों तोड़ा तुमने इन कलियों को

दुलाल विश्वास
आर्थिक अधिकारी, श्रम ब्यूरो, शिमला

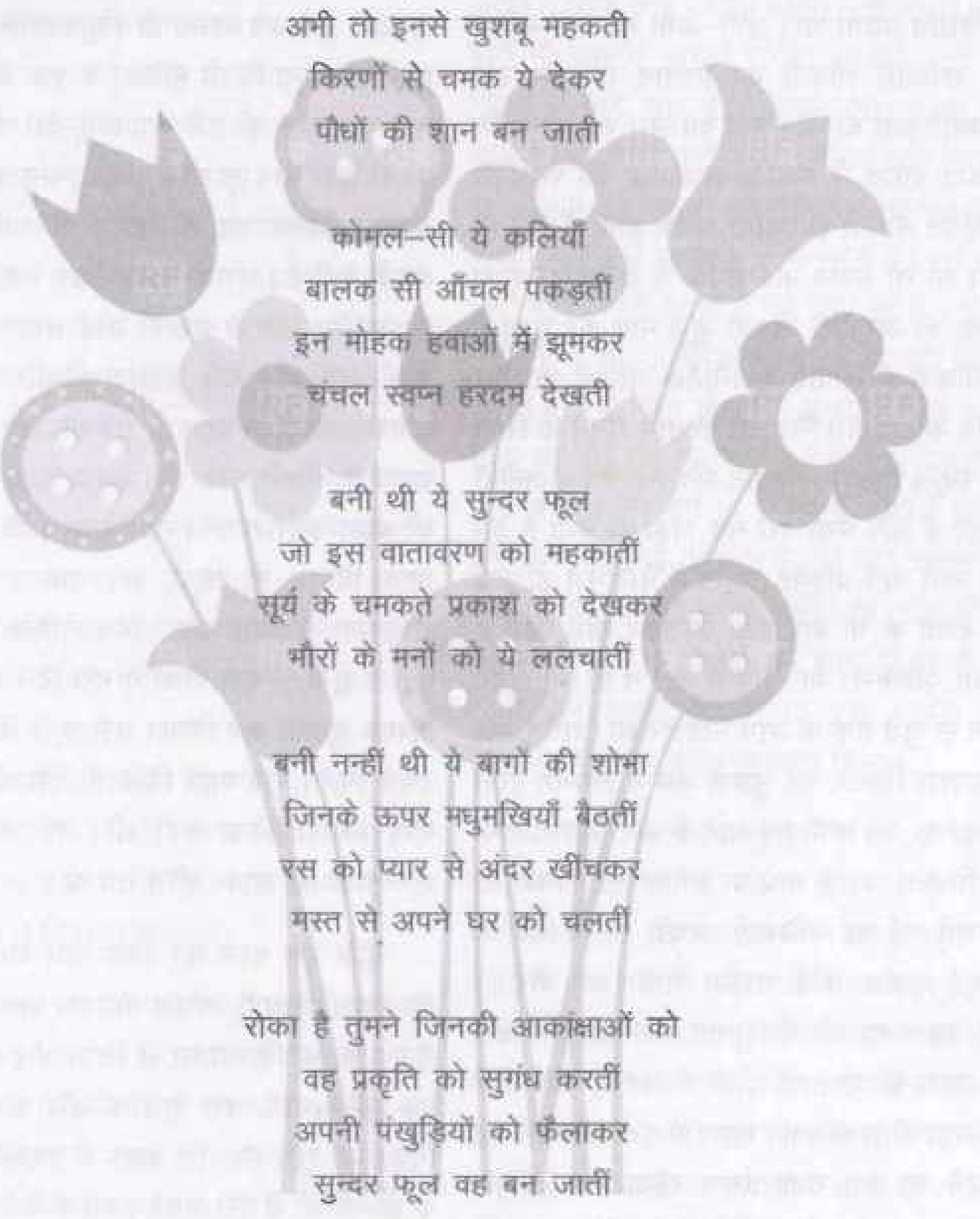

क्यों तोड़ा तुमने इन कलियों को
अभी तो इनसे खुशबू महकती
किरणों से चमक ये देकर
पौधों की शान बन जाती

कोमल-सी ये कलियाँ
बालक सी आँचल पकड़ती
इन मोहक हवाओं में झूमकर
चंचल स्वप्न हरदम देखती

बनी थी ये सुन्दर फूल
जो इस वातावरण को महकाती
सूर्य के चमकते प्रकाश को देखकर
भौरों के मनों को ये ललचाती

बनी नन्हीं थी ये बागों की शोभा
जिनके ऊपर मधुमखियाँ बैठतीं
रस को प्यार से अंदर खींचकर
मस्त से अपने घर को चलतीं

रोका है तुमने जिनकी आकांक्षाओं को
वह प्रकृति को सुगंध करतीं
अपनी पंखुड़ियों को फैलाकर
सुन्दर फूल वह बन जातीं

वन की अग्नि चंदन की लकड़ी को भी जला देती है, अर्थात् दुष्ट व्यक्ति किसी का भी अहित कर सकता है। -आचार्य चाणक्य

गुरुकुल

विमल कुमार शर्मा, प्रधान प्रणाली विश्लेषक
राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, शिमला

राघव शहर के प्रतिष्ठित क्रिस्चन मिशनरी स्कूल में गणित और विज्ञान पढ़ता था। अभी–अभी कुछ ही महीनों पहले उसने सरकारी नौकरी का प्रस्ताव छोड़कर इस नौकरी को प्राथमिकता दी थी। आप को लग रहा होगा कि ऐसा क्यों किया राघव ने जबकि अध्यापक की सरकारी नौकरी तो प्राईवेट नौकरी से ज्यादा अच्छी होती है, मैंने भी राघव से पूछा था तो उसने बताया कि वे करीब दो साल पहले अध्यापक की सरकारी नौकरी कुछ माह कर चुका है लेकिन इस नौकरी में सिवाए राजनैतिक नेताओं के पीछे घूमने और गाँव के स्थानीय निठल्लों के ताने सुनने के सिवा कुछ नहीं है। स्कूल शिक्षण–संस्थान अब स्थानीय राजनीति के अड्डे बने हुए हैं और भैया मेरा मन खट्टा हो गया है इन से। शहर के जाने माने प्राइवेट स्कूल में पैसे भले ही कम मिलें लेकिन बच्चों के माँ बाप हाथ जोड़कर खड़े रहते हैं भले ही वो नेता, ऑफिसर या व्यापारी क्यों न हो। मैं राघव के आत्मसमान से जुड़े तर्क के आगे निरुत्तर था। राघव और मैं शाम को अक्सर मिलते, वह मुझसे उम्र में लगभग सात आठ साल छोटा था, वह कभी घर आने के बाद मिलता कभी घर आते हुए मिलता, उसके कंधे पर हमेशा एक अच्छा सा बैग होता जिसमें नई नई पत्रिकाएँ, अच्छी सी किताब या नई खरीदी हुई गज़ल, कोई स्तरीय संगीत की कैसेट। राघव जो भी पढ़ता या जो भी सुनता उसे बड़े प्रेम और आग्रह से मेरे साथ बाँटता। हम दोनों के घंटे यूँ बीत जाते कि समय का पता ही न चलता। राघव में एक आकर्षण था और आगे बढ़ने का एक सकारात्मक रवैया भी, जो मुझे उसके और ज्यादा करीब ले जाता। मैं बेसब्री से उसका इंतजार करता। मैं और राघव अक्सर उसके कमरे में घंटों डूब कर ओशो की कैसेट्स भी सुनते और गुलाम अली और जगजीत सिंह की गज़ल भी। भविष्य को लेकर राघव की परिकल्पनाएँ आम विचारधारा से हट कर थी।

रमेश भाई मैं नौकरी छोड़ रहा हूँ अब मेरा मन यहाँ नहीं लगता। मुझे अब अपना ही स्कूल खोलना है। राघव ने यह बात मुझे बिना किसी भूमिका के एक दम कह दी। मैं सोच नहीं पा रह था की इसे क्या कहूं, वैसे तो मैं उस से बड़ा था पर बौद्धिक स्तर पर तो मैं उसका अनुयायी ही था, लेकिन मैं यह भी जानता था की राघव की आर्थिक स्थिति ज्यादा अच्छी नहीं है। उसके माता–पिता उस पर निर्भर तो न थे पर आर्थिक रूप से उसकी कोई सहायता करने की स्थिति में भी नहीं थे। मेरी आर्थिक स्थिति भी ऐसी थी कि मैं चाहकर भी थोड़ा बहुत ही सहयोग कर पाता। एक हफ्ते में राघव ने नौकरी छोड़ दी। स्कूल वालों ने भी उसे समझाने की बहुत कोशिश की। उन्होंने कहा कि छुट्टियाँ ले लो और ठण्डे दिमाग से सोचो, तब तक हम किसी वैकल्पिक अध्यापक से काम चला लेंगे। लेकिन राघव ने किसी की एक न सुनी। स्कूल वालों ने दस दिन के अंदर उसका सब हिसाब चुकता कर दिया। उसे कुल मिलाकर पंद्रह हजार रुपये मिले। मुझे बहुत फिक्र हो रही थी लेकिन राघव को कोई ज्यादा फिक्र नहीं थी। वह तो अपनी आगे की योजनाओं का खाका खींच रहा था।

चूंकि इस बरस का आधा सत्र बीत चुका था इसलिए वह स्कूल तो अभी ज्वाइन नहीं कर सकता था। उसने शहर में एक कमरा किराये पर ले लिया और उसमें एक अलमारी, एक ब्लैक बोर्ड, दस कुर्सियां और पांच छोटे टेबल लगा दिए। वह खुद हर रोज शहर के स्कूलों में जाता और वहां के अध्यापकों से ऐसे अच्छे बच्चों के बारे में सूचनाएँ एकत्रित करता जो कि पढ़ने में मेधावी किन्तु गरीब थे। कुछ ही दिनों में राघव के पास तीस बच्चों की सूची थी। अब अगला कदम उन बच्चों से और उनके माता पिता से बात करना था ताकि वे राघव के पास अपने बच्चे भेजने के लिए राजी और सहज हो सकें। इन तीस बच्चों में बारह लड़कियां और अठारह

लड़के थे। सबसे पहले राघव की मुलाकात गुरुप्यारे से शाम को उनके घर पर हुई। गुरुप्यारे राज मिस्त्री का काम करते थे और अभी अभी घर पहुंचे थे। राघव जैसे ही उनके घर पहुंचा वे थोड़े सकपका गए। क्योंकि वो राघव से परिचित नहीं थे, राघव ने उनसे कहा कि आपकी बेटी सीता पढ़ने में बहुत अच्छी है और मैं चाहता हूँ कि मै उसे पढ़ाऊँ ताकि वह अपने जीवन में और आगे बढ़ सके। साहिब, हम इस काबिल नहीं कि हम अपने बच्चों को स्कूल से आगे शिक्षा दिलवा सकें। हम तो उसकी फीस ही बड़ी मुश्किल से दे पाते हैं तो आपको हम क्या दे पाएंगे! गुरुप्यारे की पत्नी रज्जी ने राघव से कहा। राघव ने कहा आपको कोई पैसा देने की जरूरत नहीं, परीक्षा और जीवन में बच्चों की सफलता ही मेरा मेहनताना है। कल अगर आपकी बच्ची जीवन में कुछ बन जाती है तो आपकी दुआएँ और फिर अपनी इच्छा से उसका सहयोग ही मुझे अपने इस नेक काम को आगे बढ़ाने में सहायता करेगा। गुरुप्यारे का घर छोटा सा और कच्चा था इसलिए रज्जी ने घर के पास ही नीम के पेड़ के नीचे खाट लगा दी थी, गुरुप्यारे और राघव खाट पर बैठ गए। रज्जी नीचे ही जमीन पर। राघव प्रेम से उनके विचार सुनता रहा। बहनजी दो तीन दिन में हम पढ़ाई शुरू करवा देंगे आप सीता को भेजती रहना बाकि सब मेरी जिम्मेदारी है, अभी आप आज्ञा दें मुझे और लोगों से भी मिलने जाना है राघव ने विनम्रता से कहा।

एक और बात अच्छी हो गयी थी कि स्कूल के दिनों से ही किताबों के प्रचारक राघव से मिलते रहते थे और उनमें से कुछ उसकी कार्य के प्रति निःस्वार्थ भावना से प्रभावित भी थे। उन्हीं में से दो पब्लिशर्ज बच्चों की प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए शिक्षण सामग्री तैयार करना चाह रहे थे, उन्होंने इस विषय में राघव से बात की। राघव को भी यह प्रस्ताव जंच गया। क्योंकि एक तो यह उसके मन के करीब था और फिर इस तरह से जीवकोपार्जन के लिए कुछ मदद हो जाएगी। उसने हाँ कर दी और पब्लिशर ने उसे पांच हजार रुपये का एडवांस चेक दे दिया। राघव खुश था अब वो आनन्द से सराबोर अपने सपने साकार करने में व्यस्त था।

पूरे एक हफ्ते की मेहनत के बाद बारह बच्चे राघव के पास पढ़ने आने लगे। वह खुश था और बच्चे भी, क्योंकि राघव न सिर्फ उन्हें पढ़ाता अपितु उन्हें अच्छी और दिलचस्प बातें भी सुनाता, अच्छा संगीत सुनाता, उन्हें नचाता और पढ़ाई के बाद कुछ देर खिलाता भी। बच्चों के लिए एक नया अनुभव था। उन्हें अपना जीवन स्तर बदला हुआ लग रह था वह अब ज्यादा आत्मविश्वास महसूस कर रहे थे कि कोई है जो उन्हें हर तरह से समझता है। इस नए माहौल में जहाँ बच्चे अपनी पढ़ाई में मन लगा रहे थे वहीं उनके भीतर छिपी कुछ और प्रतिभाएं भी बाहर आ रही थी। कुछ बहुत अच्छा गाते थे, कुछ खेलने में अच्छे थे, कुछ को लिखने का शौक था और सब मिलाकर कहें तो एक उल्लास था। चूँकि सभी बच्चे निम्न वर्ग से थे तो ये माहौल उन सबको भी समाज में एक नई पहचान दे रहा था। राघव ने अपने इस संस्थान का नाम भी गुरुकुल रखा था। धीरे धीरे समय बीत रहा था, राघव के प्रयासों को शहर में पहली पहचान तब मिली जब उनके बनाये गए एक साइंस प्रोजैक्ट को राजकीय स्तर पर प्रथम पुरस्कार मिला।

राघव की नींद आज सुबह तीन बजे ही खुल गई। कुछ देर बिस्तर पर करवटें बदलने के बाद भी सोने की सारी कोशिशें बेकार रही। उसका मन आज बहुत उत्सुक और बैचैन था। ऐसे बेचैनी उसने आज तक महसूस नहीं की थी। आज बोर्ड का दसवीं का रिजल्ट आ रहा था और राघव के चार छात्रों ने दसवीं की परीक्षा दी थी। राघव को उनके परिणाम की फिक्र हो रही थी। किसी तरह सुबह के चार बज गए। राघव ने जा कर ठण्डे पानी से स्नान किया और पौने पांच बजे राघव मंदिर पहुँच गया। उसने मंदिर में पूजा की और प्रभु से बच्चों की सफलता के लिए दुआ मांगी। आज भी बाकी दिनों की तरह मंदिर से घर पहुंचा और घर आकर अपने कमरे में बैठ कर माँ का इंतजार करने लगा कि वह चाय ले कर आती ही होगी। अभी चाय पी ही रहा था की

सब बच्चे उसके घर ही पहुँच गए। राघव का मन खुश हो गया उसने माँ को कहा कि सब बच्चों के लिए कुछ मीठा बनाओ, आज का दिन बहुत शुभ होने वाला है। माँ भी बिना देरी किये हलवा बनाने में जुट गयी। इतने में हामिद दौड़ता हुआ आया। वो अखबार वाली गाड़ी के रुकते ही वहां से अखबार ले कर आ गया। उसे राघव के पास पहुँचने की इतनी जल्दी थी कि उसने अखबार को खोल कर भी नहीं देखा। जैसे ही उसने राघव के हाथ में अखबार दिया तो सब की सांसें तेज हो गयी। राघव जल्दी से अखबार में रिजल्ट ढूँढ़ने लगा। इतने में अखबार का प्रथम पृष्ठ उसके हाथ से फिसल कर नीचे गिर गया। वो जैसे ही उसे उठाने को नीचे झूका तो उसकी नजर एक दम सीता के नाम पर पड़ी उसने बाकि अखबार छोड़ जैसे ही पहला पन्ना पढ़ना शुरू किया तो मानो उसे अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ। सीता ने बोर्ड में पहला स्थान हासिल किया था और बाकी तीन बच्चों के नाम भी बोर्ड के पहले दस प्रतिभाशाली बच्चों की सूची में थे। यह आज तक का रिकार्ड था किसी संस्थान और शहर के लिए। सब ने जोर से एक दूसरे को गले लगाया। सबकी आँखों में आंसू थे।

आज पचीस वर्ष बाद गुरुकुल स्कूल का विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय स्तर पर नाम है क्योंकि उसकी सफलता के पीछे निःस्वार्थ प्रयास और बच्चों का विश्वास है। सीता आज कल अमेरिका की सिल्कौन वैली में एक प्रतिष्टित आईटी कम्पनी में मुख्य कार्यकारी अधिकारी है। अब गुरुप्यारे और रज्जी यहीं रहते हैं, लेकिन सीता आज भी राघव से जुड़ी हुई है। बाकी सभी प्रतिभाशाली छात्रों की तरह, जो आर्थिक और वैचारिक रूप से राघव की मदद करते हैं। राघव का बहुत बड़ा नाम है लेकिन इन सब के बावजूद गुरुकुल में आज भी मेधावी बच्चों को वैसे ही मुफ्त पढ़ाया जाता है जैसे कि पच्चीस बरस पहले।

बेल्जियम में जन्में फादर बुल्के ने हिंदी प्रेम के कारण अपनी पीएचडी थीसिस हिंदी में ही लिखी। जिस समय वे इलाहाबाद में शोध कर रहे थे उस समय देश में सभी विषयों की थीसिस अंग्रेजी में ही लिखी जाती थी। उन्होंने जब हिंदी में थीसिस लिखने की अनुमति माँगी तो विश्वविद्यालय ने अपने शोध संबंधी नियमों में बदलाव लाकर उनकी बात मान ली। उसके बाद देश के अन्य हिस्सों में भी हिंदी में थीसिस लिखी जाने लगी।

माँ

शेर सिंह, एम.टी.एस.
सर्किल कार्यालय, शिमला–171009

न समझ पाया, न समझ पाऊँ
तुझ पे माँ बलिहारी जाऊँ।
दुनिया में लाई तू सहन करके पीड़ा
माँ तू उठाती मेरी ज़िम्मेदारी की पीड़ा

मुझे पालने के लिए अपना चैन गंवाया,
पर ये बता माँ, बदले में तूने क्या पाया।
मैं रोता तो तू रोती,
मैं सोता तो तू सोती।

मुस्कुराहट देख कर मेरी,
न जाने कितनी खुशी होती।
चोट लगती मुझे, दर्द तुझे होती,
बिना मेरी जिंदगी लम्बी सजा है।

अतुल्य तू अतुल्य तू।
तेरी मुस्कान के लिए जहान् छोड़ दूं।
दुनियां में लाया तूने,
सब कुछ सिखाया तूने।

मेरे लिए निंदिया अपनी त्यागी,
मेरे लिए ही रात भर जागी।
तेरे बिना क्या वजूद था,
मेरे लिए दुनियाँ में आना दूर था।

सुन्दर भी है। नटखट भी है।
दरगाह भी है। तीर्थ भी है।
है लफज़ तू शीर्षक भी है।
है जन्मदाता, तू विधाता भी है।

पलकों पर बिठा तुझे।
रानी जैसे सजाऊँ तुझे
तू है रब्ब मेरी, रब्ब जानता है।
तू माँ है रब मेरी,
जग सारा जानता है।

सभ्यता की ओर एक नन्ही कुलाँच

प्रवीण कुमार
हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, पंथाघाटी, शिमला

राहुल जिद्दी था, बेबाक, उच्छृंखलता से लबरेज़, किन्तु एक हंसते–खेलते परिवार की जान था। उस दिन पिकनिक पर राहुल, उसका बड़ा सिद्धार्थ व उसकी माँ शहर की आवो–हवा से दूर निकल पड़े थे। यह लम्हा हर रोज़ की तरह नीरस न था इसलिए दोनों भाई आज बस जी जाना चाहते थे।

पहले बैडमिंटन, फिर चोर–पुलिस का खेल, कुश्ती और न जाने क्या–क्या! थक हारकर वे दोनों भाई शांत हो गए। माँ ने दोनों को त्वरित ऊर्जादायक फल केले, सेब आदि दिये। राहुल तो मानों उन पर टूट ही पड़ा था। उसने केले के छिलकों को जहां–तहां फैंक दिया और फिर से मशगूल हो गया चौकलेट खाने में। बड़ा भाई सिद्धार्थ भले ही इतना बड़ा न था किन्तु आधारभूत समझ भरी पड़ी थी। वह जानता था कि यह केले के छिलके और छोटे भाई द्वारा बिखेरा गया अन्य कूड़ा–करकट किसी राहगीर के लिए परेशानी का सबब बन सकता है। मोहन ने राहुल को डांटा भी लेकिन यह डांट भी राहुल को भेद न सकी, उसने जिद्द में और भी कचरा फैंक दिया। सिद्धार्थ ने माँ के पास जाना उचित समझा। किन्तु माँ के लाड–प्यार में और राहुल की जिद्द में समझ का एक अनसुलझा संभ्रात फासला था। इसी उहापोह में पार्क में आया एक व्यक्ति उस कचरे पर फिसल गया। किन्तु वह इन्सान व्यावहारिक था उसने तुरंत पर्यावरण मित्र के लिए झाडू उठा लिया। राहुल शर्म से लाल हो गया था। वह समझ गया कि जीवन में जिद्द खाने–पीने तक ही सही है उसके उपरांत यह ठेठ असभ्यता है। साथ ही उसने जो पर्यावरण मित्र के साथ अघात किया था उसका अहसास भी उसकी बुद्धि कर चुकी थी। इसी बीच माँ और सिद्धार्थ ने भी बिखरे कूड़े को कूड़ेदान में डालना शुरू कर दिया। अब राहुल ने भी मुस्कराते हुए कूड़े–करकट को कूड़ेदान में ही डालना आरंभ कर दिया। उसने कसम खा ली कि वह जीवनपर्यंत इस सीख की पालना करेगा।

किसी भी व्यक्ति की वर्तमान स्थिति को देखकर उसके भविष्य का मजाक न उड़ाओ, क्योंकि कल में इतनी शक्ति है कि वह एक मामूली कोयले के टुकड़े को हीरे में तबदील कर सकता है।

– आचार्य चाणक्य

हिन्दी मेरी संस्कृति

आकाश दीप
निरीक्षक/हिंदी अनुवादक
भारत तिब्बत सीमा पुलिस बल

अखण्ड है, प्रचण्ड है,
इसमें सबकी उमंग है,
हिंदी हिन्दोस्तान में,
अभिन्न एक अंग है,

राज है, राष्ट्र है,
यह वतन का प्रतीक है
हिंदी जिसकी संस्कृति
बस उसी की तो जीत है।

खेत हैं, खलियान हैं,
मेहनतकस किसान हैं
हिंदी के इस देश में,
हिंदी मेरी पहचान है।

गुरु है, सन्त है,
पतझड़ और बसंत है
एक राष्ट्रभाषा की
बोलियां अनन्त है।

रहा अब जमाना नहीं,
तीर और तलवार का
गोलियों की आवाज़ में गूंजे
हिंदी में गान देश प्यार का।

कशिश है, ये एहसास है
सबका इसमें विश्वास है
समझने – समझाने का
माध्यम सबसे ये खास है।

सुर है ताल है,
शब्दों का भण्डार है
जिसने भी अपनाया है
उसे मिलता सशक्त आधार है।

गीत है, गज़ल है,
गीता का भी ज्ञान है,
सम्बोधन जो करे हिंदी में
वह व्यक्ति ही महान है।

गंगा है, जमुना है,
और झरनों का शोर है,
मोर–पपीहा हिंदी बोले
यहाँ हर कोई सरावोर है।

सर्वोच्च है, संपूर्ण है,
संकीर्ण मगर कभी नहीं
यह समां है, हाथ बढ़ाने का
अभी नहीं तो कभी नहीं।

'आकाश' है, दीप है
नित जीवन में नई सीप है
जीतना है तो अपनालो
मेरी हिन्दी तो सबकी मीत है।

हिन्दोस्तां मेरा वतन है
हिन्दी से मेरी शान है
दिल में ये बसती रहेगी
मेरी जाँ भी इसपे कुर्बान है।

पंचतंत्र तथा प्रबन्धन क्षमताएं

मेजर जनरल ए.के. शोरी,
चीफ पोस्टमास्टर जनरल, हि.प्र. डाक सर्किल, शिमला

प्राचीन भारतीय राजनैतिक दर्शन का आधार धर्म है। जिसका तात्पर्य है– काम करने का सही ढंग अथवा न्याय करना। एक सुदृढ़ राजनैतिक, आर्थिक, न्यायिक तथा सामाजिक प्रणाली के लिए प्राचीन ग्रन्थ रीढ़ की हड्डी की भांति हैं जिनकी नींव सुशासन के सिद्धान्त हैं। सुशासन आधुनिक युग का लोकप्रिय पारिभाषिक शब्द है। 'सुशासन' पर बात करने से पहले प्राचीनकाल के सिद्धान्तों को समझना आवश्यक है। कला, संस्कृति, साहित्य, संगीत, चित्रकला तथा ऐसी विभिन्न कलात्मक गतिविधियों का उत्थान तभी सम्भव है जब लोगों के पास समय हो और ऐसा तभी सम्भव है जब शान्ति हो, कानून एवं व्यवस्था की समस्या न हो तथा प्रशासन ऐसी गतिविधियों को प्रोत्साहित करे और ऐसा तभी सम्भव है जब प्रशासन सुशासन अथवा नीतिशास्त्र के सिद्धान्तों से चलें तथा परिणामस्वरूप लोग धनी एवं समृद्ध हो।

आज हम कानूनी नियम, संवैधानिक प्रावधान एवं विधान, कार्यपालिका तथा न्यायपालिका के मध्य शक्तियों का विभाजन, कर्तव्य–अधिकार की बात करते हैं तथा राजनीति–वैज्ञानिक जैसे हैरॉल्ड लास्कि, जे एस मिल, प्लूटो, अरस्तु तथा भारतीय मूल से चाणक्य का सन्दर्भ लेते हैं। परन्तु हम यह भूल जाते हैं कि उन्हें राजनैतिक, सामाजिक तथा दार्शनिक विचार भारी संख्या में विद्यमान भारतीय ग्रन्थों से प्राप्त हुए जिनमें 'पंचतन्त्र' प्रमुख है।

पंचतन्त्र तथा हितोपदेश–दोनों की ही रचना विष्णु शर्मा ने तीसरी सदी बी. सी. के लगभग की। पंचतन्त्र को नीतिशास्त्र के क्षेत्र में श्रेष्ठ कृति के रूप में देखा जाता है। नीति का अर्थ जीवन में नीतिसंगत (बुद्धिमतापूर्ण) आचार कहा जा सकता है तथा शास्त्र का अर्थ तकनीकी अथवा

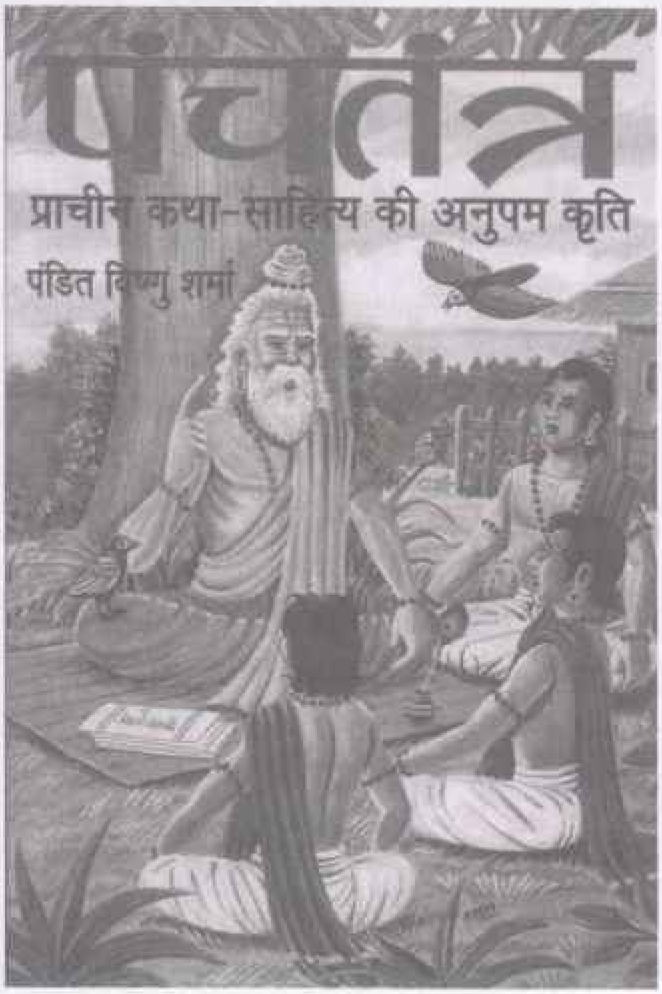

वैज्ञानिक ग्रन्थ है। अतः पंचतन्त्र को राजनीति विज्ञान अथवा मानवीय आचरण का ग्रन्थ कहा जा सकता है। इसे जनजीवन का सदाचार कहना अधिक उपयुक्त रहेगा।

अन्य कहानी में पिरोयी गई पंचतंत्र की कहानियों के संग्रह में उच्च कोटि का ज्ञान है। यद्यपि मुख्यतः कहानियां बच्चों के लिए तथा एक सामान्य बुद्धि वाले व्यक्ति के लिए हैं जिसमें पशुओं को पात्र के रूप में दिखा कर कहानी कही गई है, तथापि इन कहानियों में आधुनिक परिवेश के साथ–साथ जीवन में सदाचार से संबंधित आधारभूत

सिद्धान्त हैं जिनमें प्रबन्धन के ऐसे सिद्धान्तों का ताना–बाना है जिन्हें हर व्यक्ति अपने व्यक्तिगत सामाजिक तथा प्रशासनिक जीवन में प्रयोग कर सकता है तथा विस्तृत रूप में शासक एवं प्रशासक भी इनकी सहायता ले सकते हैं।

यह कहानियाँ जो धर्म एवं अर्थशास्त्र से प्रेरित हैं, इनमें उच्च शिक्षा एवं नैतिक सिद्धान्तों का समावेश है तथा लगातार उठते रहने वाले प्रश्नों का समाधान है कि मनुष्य जीवन में परमानन्द कैसे प्राप्त करे तथा आनन्द की सर्वोच्च स्थिति पाने के लिए नीति किस प्रकार सहायक हो सकती है ताकि मानव की शक्तियों का सम्पूर्ण विकास हो, उसे ऐसा जीवन प्राप्त हो जिसमें संरक्षण, समृद्धि, निर्णय लेने की क्षमता, मित्रता तथा सद्ज्ञान का मिश्रण हो। पंचतंत्र की कहानियाँ वास्तव में सभी पहलुओं के बारे में हैं जिनमें प्रशासन व्यावहारिक सिद्धान्त, मिलजुल कर कार्य करना, वित्तीय प्रबन्धन, प्रशासन तथा व्यक्तिगत जीवन में नैतिकता, अर्थात व्यक्तिगत, सामाजिक तथा जनजीवन सभी के प्रति दृष्टिकोण इसमें समाहित है।

कुछ दशक पहले, कहानी सुना कर बच्चों को शिक्षा देने की परम्परा सामान्य रूप से प्रचलित थी जब कि आधुनिक तकनीक के आगमन से मनुष्यों का आपस में संबंध संकुचित हो गया है तथा बच्चे, बड़ों से दूर हो गये हैं। सोते समय कहानी सुनना दैनिक जीवन का अटूट हिस्सा था। बच्चे सांयकाल की उत्सुकता से प्रतीक्षा करते, समय पर अपना सारा कार्य तथा पाठशाला में शिक्षक द्वारा दिया गृहकार्य करते (अक्सर यह एक शर्त होती थी) ताकि कहानी का समय न छूट जाए। इसका आकर्षण इतना था कि बच्चे कहानी छूट जाने के भय से हर वह कार्य करने के लिए तैयार रहते थे जिसे वे अन्यथा न करते। वे अपने दादा–दादी, नाना–नानी (प्रत्येक घर में वयोवृद्ध ही अक्सर कहानी सुनाते थे) से एक के बाद एक कहानी सुनने की जिद्द करते और इस तरह कहानी सुनते–सुनते सो जाते। अन्यथा यूं कहें कि कहानियां उनके लिए सर्वोत्तम नींद की दवा थी।

वास्तव में कहानियां कुछ और नहीं, अपितु ज्ञान का एक अंश, जीवन जीने की कला तथा उच्च नैतिक मूल्यों का वर्णन था जिसमें नीतिपूर्ण जीवन जीने की कला सिखायी जाती थी। कल्पित कथा के मिश्रण से बच्चों को सदाचार एवं सद्व्यवहार सिखाया जाता था। बहुत सी कहानियां सभी धर्म, जाति, सम्प्रदाय (छोटे से स्थानीय परिवर्तन के साथ) में एक समान थी जिनमें वैश्विक सत्य तथा नीति के आधारभूत सिद्धान्त वर्णित रहते थे। कार्यपूर्ति के लिए प्रत्येक साधन को नीतिसंगत ठहराने की नीति को न मानते हुए आरम्भ से ही बच्चों के ऊर्वर मस्तिष्क में नैतिक मूल्यों की शिक्षा की नींव डाली जाती थी। कहानियां पूर्णतः कल्पित ही नहीं होती थी, उनमें ऐतिहासिक घटनाएं भी राष्ट्रीय एवं देशभक्त पात्रों के इर्द–गिर्द बुनी होती थी ताकि अगली पीढ़ी के लिए तय दिशा–निर्देश स्पष्ट हो जाएं। बच्चों में यह सद्गुण बचपन से ही उत्पन्न हो जाते थे, साथ ही बड़ों के प्रति प्रेम, आदर तथा गहन स्नेह भी रहता था।

यह सब कहां खो गया है ? बच्चे स्वयं को बड़ों से अधिक बुद्धिमान एवं ज्ञानवान समझने लगे हैं क्योंकि वे इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों को सुगमता से प्रयोग कर सकते हैं। बड़ों का स्थान इलेक्ट्रॉनिक गैजेट ने ले लिया है, मनुष्य के स्थान पर मशीन है तथा परिणाम स्वरूप संबंध भी मशीनी ही हो गये हैं। संबंधियों में भावनात्मक संबंधों की जगह दूर बैठे मशीनी मित्र ने ले ली है जोकि इलेक्ट्रॉनिक माध्यम से करीब है। निकटतम संबंधियों की अपेक्षा अनजान मित्र अधिक विश्वसनीय हो गया है।

निश्चित रूप से लोग कहते हैं कि नैतिक मूल्य आज गिरगये हैं, बड़ों के लिए सम्मान नहीं है, युवा पीढ़ी में

सहनशीलता की कमी है, अहंकार ने स्व को ढक दिया है, रिश्तों का आधार प्रेम एवं स्नेह न होकर स्वार्थ हो गया है, हमें यह समझ लेना चाहिए कि आज के युग की सामाजिक रूग्णता का मुख्य कारण नैतिक शिक्षा का अभाव है। यदि बच्चा अपना बचपन परिचारिका के साथ अथवा शिशुगृह में बिताता है तो उसे नैतिक शिक्षा कौन देगा और क्यों देगा ? प्रारम्भिक शिक्षा उस अनजान व्यक्ति के ज्ञान तथा बौद्धिकता पर आधारित होगी जिसका अपना स्तर संदिग्ध है। तो एक बच्चे का मानसिक, नैतिक तथा भावनात्मक विकास कैसे होगा ? ध्यान रखें कि यह आरम्भ में अपनाये गये मूल्य ही संस्था के व्यवहार को तथा आचार–व्यवहार को प्रभावित करेंगे जोकि राजनैतिक समाज में भी दिखाई देते है।

जो हम कहानियों से सीखते हैं उससे हमारी प्रबन्धन क्षमताएं समृद्ध होती हैं ताकि हम बदलते परिवेश में अच्छे से अच्छा निष्पादन कर सकें। तुरन्त सफलता पाने के लिए अनुचित साधनों का प्रयोग पूर्णतया निषिद्ध माना जाता है। दूसरे शब्दों में, यह अपने पर नियन्त्रण था जिसका केन्द्र नैतिक मूल्य होते थे, क्योंकि सद्नीति का अर्थ सुशासन तथा सकारात्मकता ही है।

आज शिक्षा एवं नैतिक मूल्यों के मध्य की दूरी ने पंचतंत्र के अनुसरण को और भी सार्थक बना दिया है। उस जमाने में स्वयं को तथा दूसरो को समझने की कला भी सिखायी जाती थी। जहां तक पंचतन्त्र की कहानियों का विषय है, संक्षिप्त वर्णन के अतिरिक्त लेखक का परिचय राजकुमारों को शेष कार्य का वर्णन करते हुए कराया गया है, इसके पांच भाग हैं। प्रत्येक भाग में मुख्य कथा है जो अपने भीतर कई खुली कहानियां समेटे हुए है जिसमें एक पात्र दूसरे पात्र को कहानी सुना रहा है। अक्सर इन कहानियों में पुनः खुली कहानियां हैं। कहानियों के साथ–साथ, पात्र भी अपना वक्तव्य स्पष्ट करने के लिए युक्तिपूर्ण कविता कहते है।

पांच किताबों का विवरण इस प्रकार है–

– मित्रभेद–मित्रों का वियोग / खोना / धोखा

– मित्र लाभ अथवा मित्र सम्प्राप्ति–मित्रों की प्राप्ति

– काकोलूकीयम–युद्ध एवं शान्ति

– लब्धप्रनसम् – प्राप्त लाभ की हानि

– अपरीक्षितकारकम् – III – देखभाल कर किया कार्य / जल्दबाजी अथवा शीघ्रता से किया कार्य / ऐसे कार्य जिनकी कोशिश नहीं की गयी।

आधुनिक प्रबन्धन में दक्ष व्यक्ति कोशिश करते हैं कि उत्तम रणनीति अपनाते हुए एक अच्छी टीम की सहायता से संस्थान के कार्य–कलाप को बदल कर, अधिकाधिक धन अर्जित करके संस्थान को आगे बढ़ायें जिसका उचित प्रबन्धन आवश्यक है। परन्तु नैतिकता के आधारभूत मूल्यों को अनदेखा कर ऐसा करना सम्भव नहीं है। यह पंचतन्त्र का सार है।

जिन लोगों में लज्जा का गुण न हो, जो किसी भी गलत कार्य को करने में संकोच नहीं करते और जो लज्जा हीन हों, उनसे कभी भी मित्रता नहीं करनी चाहिए।

– आचार्य चाणक्य

गेहूँ एवं जौ रतुआ रोगों के शोधकार्यों का सारसंग्रह

डॉ. ओम प्रकाश गंगवार, वैज्ञानिक
भारतीय गेहूं एवं जौ अनुसंधान संस्थान, शिमला

सामान्य परिचय

भारत में गेहूँ एवं जौ रतुओं पर शोध कार्य सन् 1923 में स्वर्गीय राय बहादुर डा. कर्म चन्द मेहता के द्वारा आरम्भ किया गया था। डा. कर्म चन्द मेहता उस समय आगरा कॉलेज में प्रोफेसर एवं अध्यक्ष पद पर कार्यरत थे। आरम्भ में रतुआ शोधों पर होने वाले खर्चों को लगभग 7 वर्षों तक उन्होंने निजी तौर पर वहन किया।

बाद में इस कार्य के लिए सन् 1930 में शाही (अब भारतीय) कृषि अनुसंधान परिषद, ब्रिटिश सरकार, द्वारा 2,43,776/–रूपये की आर्थिक सहायता दो किश्तों में प्रदान की गई। इस आर्थिक अनुदान से रतुआ शोध कार्यों में और अधिक विस्तार हुआ। रतुआ शोध कार्य को सुचारू रूप से चलाने के लिए डा० मेहता ने आगरा के अलावा तीन

कार्यालय भवन (1875)

अन्य स्थानों – शिमला, अल्मोड़ा एवं मरी (पाकिस्तान) का चयन किया। इन स्थानों में से लावरडेल, शिमला को उन्होंने शोध कार्यों एवं जलवायु की दृष्टि से सबसे उपयुक्त पाया। यहां रतुओं पर शोध एवं उनका रख–रखाव बड़ी आसानी से किया जाता है। इस प्रकार सन् 1930 में यह केन्द्र अस्तित्व में आया। डा० मेहता ने यहां पर किए कार्यों को कई विश्वस्तरीय प्रतिष्ठित जर्नलों/पत्रिकाओं में प्रकाशित किया।

सन् 1950 में उनकी मृत्यु के पश्चात, यह केन्द्र, भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान के अधीन हो गया। तदपश्चात जब गेहूँ अनुसंधान निदेशालय एक स्वतंत्र संस्था के रूप में बना तब यह केन्द्र निदेशालय का हिस्सा बना। इस समय गेहूँ अनुसंधान निदेशालय को भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान के रूप में जाना जाता है।

स्थान एवं जलवायु

यह केन्द्र, शिमला शहर के पूर्व में लावरडेल नामक स्थान पर 3.6 एकड़ भूमि पर स्थित है। यहां की जलवायु ठंडी तथा औसत तापमान सर्दियों में 0–16 और गर्मियों में 15–28 डि०सें० रहता है। यह समुद्रतल से लगभग 2000 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है तथा यहां औसतन वर्षा 1425 मि०मी० होती है।

शीशगृहों का एक दृश्य

संसाधन

वर्तमान में बुनियादी सुविधाओं के अंतर्गत इस केन्द्र में 12 ग्लास/पौलीहाउस उपलब्ध है जिनमें 4 शीशगृह वातानुकूलित है। लगभग 2 एकड़ भूमि पर पादप प्रजनन एवं बीज बहुलीकरण कार्य किए जाते हैं। इसके अलावा एक छोटी सी प्रयोगशाला आणविक कार्य हेतु समर्पित है। इसके अतिरिक्त अल्ट्रा डीप फ्रिजर (–80 डि०सें०) एवं तरल नाईट्रोजन (–196 डि०सें०) दीर्घकालीन रतुआ सामग्री

भंडारण के लिए उपलब्ध है। इस केन्द्र पर गेहूँ एवं जौ रतुआ नमूनों के विश्लेषण, जर्मप्लाज्म का रतुआ के उग्र प्रभेदों के विरूद्व मूल्यांकन, रतुआ प्रतिरोधी जीन्स के विशिष्टीकरण हेतु सम्पूर्ण सुविधायें उपलब्ध हैं। यह केन्द्र गेहूँ के तीनों रतुओं के सभी प्रभेदों का परि रक्षक है तथा इनके संरोप को पूरे देश के विभिन्न शोध केन्द्रों को आपूर्ति भी करता है। इस तरह का कार्य करने वाला यह भारतवर्ष का एक मात्र केन्द्र है।

वर्तमान में मुख्य शोध कार्य गेहूँ एवं जौ रतुओं पर किया जाता है। इनमें गेहूँ का तना/काला रतुआ (पक्सीनिया ग्रेमिनिस ट्रिटिसाई), पत्ती/भूरा रतुआ (पक्सीनिया ट्रिटिसिना), धारीधार/पीला रतुआ (पक्सीनिया स्ट्राईफार्मिस) एवं जौ का तना/काला रतुआ (पक्सीनिया ग्रेमिनिस ट्रिटिसाई हॉर्डि), पत्ती/भूरा रतुआ (पक्सीनिया हॉर्डि), धारीधार/पीला रतुआ (पक्सीनिया स्ट्राईफार्मिस हॉर्डि) प्रमुख हैं।

अधिदेश (Mandate)

1. भारत में गेहूँ एवं जौ रतुओं में परिवर्तनशीलता की जांच तथा नए प्रभेद की पहचान करना।
2. रतुआ प्रतिरोधी स्रोतों की पहचान करने हेतु गेहूँ एवं जौ की अग्रिम किस्मों का सभी रतुओं के उग्र प्रभेदों के विरूद्व मूल्यांकन करना।
3. रतुआ प्रतिरोधी जीन्स को गेहूँ अग्रिम लाईनों में जीन मिलान तकनीक द्वारा अभिधारणा करना।
4. रतुआ प्रतिरोधी जेनेटिक स्टॉक (आनुवंशिक वंश) विकसित करना, रतुआ प्रतिरोध आनुवंशिकी व्यस्क पादप प्रतिरोध एवं गेहूँ के रतुआ प्रभेदों की परिवर्तिता का मार्कर द्वारा अध्ययन करना।
5. सभी रतुआ प्रभेदों का जीवित ग्रहणक्षम पौधों पर तथा तरल नाईट्रोजन में (–196 डि०से०) दीर्घकालीन रख–रखाव।
6. भारत में गेहूँ एवं जौ रतुओं के नियंत्रण के लिए रणनीति बनाना।
7. संपूर्ण देश के विभिन्न शोध केन्द्रों या वैज्ञानिकों के लिए रतुआ प्रतिरोध एवं आनुवंशिक अध्ययन हेतु रतुआ के उग्र प्रभेदों के संरोप/रस्ट इनॉकुलम की पूर्ति करना।
8. गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी (डब्ल्यू.डी.एम.एन) तथा सार्क (दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ) गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी का संचालन एवं समायोजन करना।

प्रमुख उपलब्धियां

गेहूँ एवं जौ रतुओं में परिवर्तनशीलता

भारत में गेहूँ एवं जौ रतुओं में परिवर्तिता की निगरानी सन् 1930 से की जा रही है। अभी तक तीनों रतुओं में 127 से अधिक प्रभेदों की पहचान आरम्भिक अवस्था में की जा चुकी है। प्रत्येक वर्ष 1500 से अधिक गेहूँ एवं जौ रतुआ नमूनों का विश्लेषण किया जाता है, जिससे देश के विभिन्न क्षेत्रों में रतुआ प्रभेदों की प्रबलता तथा नये प्रभेद की पहचान करने में सहायता मिलती है। इस जानकारी का उपयोग गेहूँ एवं जौ की रतुआ प्रतिरोधी किस्मों का परिनियोजन करने में होता है जो कि रतुआ नियंत्रण की सबसे सस्ती एवं पर्यावरण हितैषी रणनीति है। देश के विभिन्न गेहूँ उत्पादक पारिस्थितिक क्षेत्रों में विविध रतुआ प्रतिरोधी किस्मों के परिनियोजन के कारण पिछले 35 वर्षों में कोई भी प्रमुख रतुआ प्रकोप नहीं हुआ है।

रतुआ प्रतिरोध के संभावित स्रोत

देश के विभिन्न प्रजनकों द्वारा विकसित की गई 1000 से अधिक अग्रिम लाईनों का मूल्यांकन रतुआ के 80 से अधिक उग्र प्रभेदों के विरुद्व किया जाता है। इस आधार पर अब तक 500 से अधिक रतुआ प्रतिरोधी लाइनों को पहचाना जा चुका है।

रतुआ प्रतिरोध जीन्स का निरूपण

इस क्षेत्रीय केन्द्र में उपलब्ध प्रमुख गेहूँ लाईनों में रतुआ प्रतिरोध आनुवंशिकी की जानकारी विकसित कर ली गई है। भारतीय गेहूँ में निम्न रतुआ प्रतिरोध जीन्स हैं –

भूरा रतुआ : एलआर 1,3,9,10,13,14ए,17,18,19,22,22ए, 22बी,23,24, 26,28,34,46 एवं 49

काला रतुआ : एसआर 2,5,6,7ए,7बी, 8ए,8बी,9बी, 9ई,11, 12,13,17, 21,24,25,30 एवं 31

पीला रतुआ : वाईआर 2,ए,9,18

वर्तमान में एलआर 24,25,29, 32,39, 45,47 एसआर 26,27, 31,32, 33,35, 39,40,43 एवं वाईआर5,10,11, 12,13, 14,15,16, एसपी,एसके, क्रमशः भूरा, काला एवं पीला रतुआ प्रतिरोधी जीन्स है।

रतुआ प्रतिरोधी आनुवंशिक स्टॉक एवं व्यस्क पादप प्रतिरोध

इस केन्द्र से अब तक कुल 26 रतुआ प्रतिरोधी आनुवंशिक स्टॉक विकसित किये गये हैं जिन्हें भाकृअप– राष्ट्रीय पादप आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो, नई दिल्ली के साथ पंजीकृत किये जा चुके है। हाल ही में 150 से अधिक लाइनों को पहचाना जा चुका है जो कि एक या अधिक रतुआ प्रभेदों के प्रति व्यस्क पादप प्रतिरोध दर्शाती है।

आणविक अध्ययन

हाल ही में भूरा रतुआ के 49 प्रभेदों में विभिन्नता का अध्ययन एसएसआर मार्कर द्वारा डी०एन०ए० स्तर पर किया गया जिससे इन प्रभेदों की अनेक समूहों में विभाजित करने में सहायता प्राप्त हुई है। मार्कर सहायित चुनाव (मास) तकनीक द्वारा गेहूँ लाईनों में अभिधारणित भूरा रतुआ प्रतिरोधी जीन एलआर 9, 19, 24, 26 एवं 28 की पुष्टि करने में मदद मिली है। इसके अतिरिक्त जीन वाईआर 10 जोकि भारत में गेहूँ के पीला रतुआ के प्रति प्रतिरोध प्रदान करता है, को रूपांकित किया गया।

गेहूँ एवं जौ प्रभेदों का राष्ट्रीय संग्रह

विभिन्न रतुआ रोगजनक के प्रभेदों को इस केन्द्र पर सन् 1930 से संभाला जा रहा है। वर्तमान में सभी रतुआ रोगजनक के प्रभेदों (127) को ग्रहणक्षम जीवित पादप पोषक पर एवं तरल नाईट्रोजन में अनुरक्षित किया जा रहा है।

रतुआ प्रभेदों के नाभिक संरोप; इनॉकुलम तथा बीजों की आपूर्ति

देश के विभिन्न शोध केन्द्रों पर आनुवंशिक एवं गेहूँ रतुआ के विरुद्ध परीक्षण करने के लिए प्रत्येक वर्ष रतुआ प्रभेदों का इनॉकुलम तथा गेहूँ के बीजों की आपूर्ति की जाती है।

गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी का आयोजन

गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी (डब्ल्यू डी एम एन) तथा सार्क गेहूँ रोग निरीक्षण नर्सरी को भारत, पाकिस्तान, बंगलादेश, भूटान और नेपाल में 75 से अधिक स्थानों पर योजन किया जाता है जिसका संयोजन एवं परिचालन इस केन्द्र द्वारा किया जाता है।

टीम उत्कृष्टता एवं बाह्य वित्तपोशित परियोजनायें

यह केन्द्र 1999 से 2005 तक राष्ट्रीय कृषि प्रौद्योगिकी परियोजना (एन.ए.टी.पी.) के तहत टीम– उत्कृष्टता में रहा हैं। इस केन्द्र पर पांच बाह्य वित्तपोषित परियोजनाओं को पूर्ण कर लिया गया है तथा अभी तीन डीबीटी एवं एक आईसीएआर परियोजना चल रही है। यह केन्द्र भाकृअनुप, राज्य कृषि विश्वविद्यालयों, भाभा परमाणु अनुसंधान केन्द्र और पादप प्रजनन संस्थान आस्ट्रेलिया के साथ सहयोगात्मक प्रयोग कार्य कर रहा है। इस केन्द्र से न्यूज़लेटर/समाचार पत्रिका (छःमाही) एवं वार्षिक प्रतिवेदन भी प्रकाशित किया जाता है।

प्रान्तीय ईर्ष्या एवं द्वेष को दूर करने में जितनी सहायता हिंदी प्रचार से मिलेगी, उतनी दूसरी किसी चीज से नहीं मिल सकती।

– सुभाष चंद्र बोस

पीलिया रोग - लक्षण, उपचार तथा रोकथाम

डॉ. मीनू अग्रवाल, आवासी चिकित्सा अधिकारी
भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान, शिमला

सुमित नए साल की छुटियाँ मनाने अपनी पत्नी के साथ दिल्ली से शिमला आया था। 4–5 दिन दोनों ने मॉल तथा शिमला के आस पास के पर्यटन स्थलों की खूब सैर की तथा हर तरह के खाने का लुत्फ उठाया। छुट्टियाँ कैसे बीत गयीं पता ही नहीं चला, वापिस दिल्ली जाने का समय हो गया था। कार ड्राईव करते समय रास्ते में सुमित को थोड़ी हरारत महसूस होने लगी, आधे रास्ते उसकी पत्नी नेहा ने ड्राईव किया। दिल्ली पहुंचते ही सुमित को बुखार हो गया व बदन दर्द करने लगा। पहले सोचा सफर की थकान है, लेकिन फिर आँखों में भी पीलापन लगने लगा तो डॉक्टर को दिखाया, पता चला उसे पीलिया हो गया है।

पीलिया रोग एक विशेष प्रकार के वायरस और किसी कारणवश शरीर में पित कि मात्रा बढ़ जाने से होता है। इसमें रोगी को पीला पेशाब आता है और उसके नाखून, त्वचा एवं आँखों का सफेद भाग पीला पड़ जाता है, बेहद कमजोरी, कब्जियत, जी मिचलाना, सिरदर्द, भूख न लगना आदि परेशानियाँ भी रहने लगती हैं।

प्रमुख कारण

विषाणु जनित वायरल हेपेटाइटिस एक प्रकार के वायरस से होने वाला रोग है जो रोग से पीड़ित रोगी के मल के संपर्क में आये हुए दूषित जल, कच्ची सब्जियों आदि से फैलता है। कुछ लोग इससे ग्रसित नहीं होते है उनके मल से इसके वायरस दूसरों तक पहुँच जाते हैं, पेट से यह लीवर में और वहां से सारे शरीर में फैल जाता है, रोगी को लगाई गई सूई का अन्य स्वस्थ व्यक्ति के शरीर में बिना उबाले प्रयोग करने से व रोगी का खून अन्य स्वस्थ व्यक्ति में चढ़ाने से भी यह रोग फैलता है। इसके अतिरिक्त बहुत दिनों तक मलेरिया रहना, पित की नली में पथरी, ज्यादा शराब पीना आदि कारणों से भी इस रोग की उत्पति होती है।

लक्षण

वायरस के शरीर में प्रवेश करने के लगभग दो सप्ताह से छः सप्ताह में इस रोग के लक्षण नजर आने लगतें हैं। लक्षणों के प्रारंभ होने से एक सप्ताह पहले ही रोगी के मल से वायरस निकलने लगतें हैं। रोगी को भूख लगना बंद हो जाता है, उसका जी मिचलाता है और कभी–कभी उसे उल्टी भी हो जाती है और कब्जियत रहती है। दाहिनी पसलियों के नीचे भारीपन या दर्द, सिरदर्द, शरीर थका–थका सा लगने लगता है। रोगग्रस्त व्यक्ति को बुखार आने लगता है और मूत्र गहरे रंग का आता है। साथ ही मल का रंग फीका हो जाता है और त्वचा एवं आँखों का रंग पीला हो जाता है।

पीलिया रोगियों की जाँच करने पर उनका लीवर कुछ बड़ा हो सकता है और रक्त में बिलीरुबिन का स्तर बढ़ जाता है। पीलिया स्वयं कोई रोग विशेष नहीं हैं बल्कि कई रोगों में पाया जाने वाला एक लक्षण है।

उपचार

पीलिया के उपचार के पूर्व रोग के कारण का पता लगाया जाता है। इसके लिए रक्त की जाँच, पाखाने की जाँच, तथा लीवर की कार्यक्षमता की जाँच करते हैं। इससे यह पता लगता है कि यह रक्त में लाल कणों के अधिक नष्ट होने से है या लीवर में खराबी है या फिर पितमार्ग में अवरोध होने से है।

पीलिया की चिकित्सा में इसे उत्पन करने वाले कारणों का निर्मूलन किया जाता है। मिर्च, मसाला, तेल, घी, प्रोटीन कम खाने की सलाह दी जाती है। लीवर अपना कार्य ठीक से सम्पादित करे इसके लिए दवांए दी जाती हैं।

यदि किसी व्यक्ति का उपरोक्त कोई लक्षण नजर आएं

तो उसे शीघ्र ही डॉक्टर के पास जा कर परामर्श लेना चाहिए। आराम करना चाहिए और घूमना फिरना नहीं चाहिए। लगातार जांच कराते रहना चाहिए। डॉक्टर की सलाह से फलों का रस, चावल, दलिया, खिचड़ी, उबले आलू, शकरकंदी, ग्लूकोस, गुड़, चीकू, पपीता, मूली आदि कार्बोहायड्रेट वाले पदार्थों का सेवन करना चाहिए।

रोकथाम एवं बचाव

पीलिया रोग से बचने के लिए कुछ साधारण बातों का ध्यान रखना जरूरी है–

खाना बनाने, परोसने, खाने से पहले व बाद में और शौच जाने के बाद में हाथ साबुन से अच्छी तरह धोना चाहिये। भोजन को ढककर रखना चाहिए, ताकि खाद्य सामग्री को मक्खियों व धूल से बचाया जा सके। ताजा व शुद्ध गर्म भोजन करें। दूध व पानी अच्छी तरह उबाल कर पीयें। कूड़ा– करकट सही स्थान पर डालें। गंदे, सड़े–गले व कटे हुए फल नहीं खाएं। धूल पड़ी या मक्खियाँ बैठी मिठाइयों का सेवन नहीं करें। स्वच्छ शौचालयों का प्रयोग करें। डॉक्टर की सलाह से हेपेटाइटिस ए तथा हेपेटाइटिस बी कि वैक्सीन लगवा लेनी चाहिए।

क्षणिकाएं

अनुपम सक्सेना
भारत सरकार मुद्रणालय, शिमला

मैं तुम्हें एक अनोखे पुस्तकालय में बदल देना चाहता हूँ ..
मैं तुम्हारे बारे में कुछ अलग शब्दों में लिखना चाहता हूँ
तुम्हारे अकेले के लिए ईजाद करना चाहता हूँ एक भाषा
जिसमें समा सके तुम्हारी देह
और जिससे मापा जा सके मेरा प्यार
मैं शब्दकोशों से बाहर की यात्रायें करना चाहता हूँ
मैं चाहता हूँ एक ऐसा मुख
जिससे निकलें शब्द ठीक वैसे ही
जैसे समुद्र से निकलती हैं जलपरियाँ
मैं तुम्हें एक अनोखे पुस्तकालय में बदल देना चाहता हूँ
जिसमें मुझे चाहिए :
बारिश की लय ... नीले–सफेद बादलों की धूल
स्लेटी रेत की उदासी भी ..

हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है -कमलापति त्रिपाठी

संत रविदास

सुखविन्दर सिंह
अवर श्रेणी लिपिक

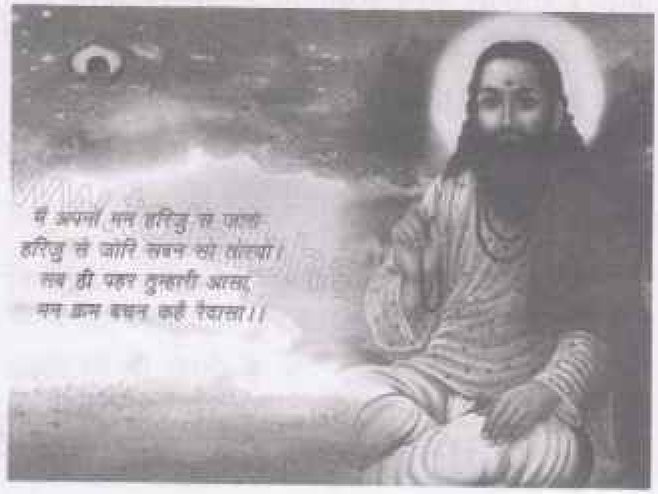

रैदास के नाम से विख्यात संत रविदास का जन्म सन 1377 अनुमानित में बनारस में हुआ। रैदास कबीर के समकालीन थे। रैदास की ख्याति से प्रभावित होकर सिंकदर लोदी ने इन्हें दिल्ली आने का निमंत्रण भेजा था। मध्ययुगीन साधकों में रैदास का विशिष्ट स्थान है। कबीर की तरह रैदास भी संत कोटि के प्रमुख कवियों में विशिष्ट स्थान रखते हैं। कबीर ने संतन में रविदास कहकर इन्हें मान्यता दी है। मूर्ति पूजा जैसे दिखावों में रैदास का बिल्कुल भी विश्वास न था वह व्यक्ति की आंतरिक भावनाओं और आपसी भाईचारे को ही सच्चा धर्म मानते थे। रैदास ने अपनी काव्य–रचनाओं में सरल, व्यावहारिक ब्रजभाषा का प्रयोग किया है, जिसमें अवधी, राजस्थानी, खड़ी बोली और उर्दू–फारसी के शब्दों का भी मिश्रण है। रैदास को उपमा और रूपक अलंकार विशेष प्रिय रहे हैं। सीधे–सादे पदों में संत कवि ने ह्रदय के भाव बड़ी सफाई से प्रकट किए हैं। इनका आत्म–निवेदन दैन्य भाव और सहज भक्ति पाठक के ह्रदय को उद्वेलित करते हैं। रैदास के चालीस पद सिखों के पवित्र धर्म–ग्रंथ श्री गुरूग्रंथ साहिब में भी सम्मिलित हैं।

संत रविदास जी द्वारा रचित आरती उनकी काव्य–कला का उत्कृष्ट उदाहरण है–

नाम तेरो आरती मजन मुरारे।
हरि के नाम बिन झूठे सगल पसारे।।
नाम तेरो आसनो नाम तेरो उरसा।
नाम तेरा केसरो ले छिटकारे।।
नाम तेरा अंभुला नाम तेरो उरसा।
नाम तेरा दीवा नाम तेरो बाती।।
नाम तेरो तेल ले माहि पसारे।
नाम तेरे की जोति लगाई भइओ उजिआरो भवन सगलारे।
नाम तेरो तागा नाम फूल माला
भार अठाहरा सगल जूठारे।
तेरो कीआ तुझहि किआ अरपउ नाम तेरा तुही चवर ढोलारे।
दस अठा अठसठे चारे खाणी इहै वरतणि है सगल संसारे
कहै रविदास नाम तेरो आरती सति नाम है हरि भोग तुहारे।।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समित, शिमला के सदस्य कार्यालयों की सूची

1	महानिदेशक, राष्ट्रीय लेखापरीक्षा एंव लेखा एकादमी यारोज, शिमला - 171004 फोन: 2803178/2652724	2	सहायक निदेशक, गीत व नाट्क प्रभाग सी0जी0ओ0 काम्पलैक्स, लौंगवुड, शिमला - 171 001 फोन:2651454
3	महालेखाकार (लेखा व हकदारी) गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला-171003 फोन:2824935	4	क्षेत्रीय प्रचार अधिकारी, सूचना एवं प्रसारण मंत्रालय, रेलवे बोर्ड बिल्डिंग, शिमला- 171 004 फोन: 2652436
5	प्रधान महालेखाकार (प्रशासन) गार्टन कैसल बिल्डिंग शिमला-171 003 फोन:2652994	6	महानिदेशक, श्रम ब्यूरो क्लैरेमोंट शिमला-171 004 फोन: 2804084
7	चीफ पोस्ट मास्टर जनरल हिमाचल प्रदेश सर्कल शिमला-171 009 फोन:2629001	8	निदेशक, केन्द्रीय आलू अनुसंधान संस्थान, बैम्लोई, शिमला। फोन:2624640/2627269
9	उप-निदेशक, सहायक आसूचना ब्यूरो गृह मंत्रालय, डारमर्ज कैथू शिमला-171003	10	सरकारी परीक्षक प्रश्नास्पद प्रलेख न्यायालयिक विज्ञान निदेशालय, रेलवे बोर्ड भवन, शिमला-171003 फोन:2811173
11	निदेशक, दूरदर्शन केन्द्र, अम्बेदकर चौक,शिमला-171004 फोन:2811450/2813448	12	युवा समन्वयक, नेहरु युवा केन्द्र भारत सरकार, डोगरा लॉज, शिमला- 171 004 फोन:2657178
13	केन्द्र निदेशक, आकाशवाणी, शिमला -171 004 फोन:	14	निदेशक भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान राष्ट्रपति निवास, चौड़ा मैदान, शिमला 171 004 फोन:2831376/2832195
15	निदेशक, जनगणना परिचालन केन्द्रीय सरकारी कार्यालय परिसर हिमाद्रि ब्लॉक-बी, प्रथम तल लौंगवुड, शिमला- 171 004 फोन: 265148/265149	16	क्षेत्रीय निदेशक, स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, दीनदयाल उपाध्याय चिकित्सालय परिसर शिमला-171 001 फोन:2651978/2653649
17	मुख्य अभियन्ता, दीपक परियोजना मिन्टोकोर्ट, शिमला-171 005 फोन:2830991	18	निदेशक, हिमालयन वन अनुसंधान संस्थान, कोनिफर कैम्पस, पंथाघाटी, शिमला-171009 फोन:2626779
19	उप-महानिरीक्षक, भारत तिब्बत सीमा पुलिस, तारादेवी, शिमला-171 010 फोन:2832886/230600	20	क्षेत्रीय निदेशक, भारत वन सर्वेक्षण उत्तरी अंचल, केन्द्रीय कार्यालय परिसर लौंगवुड, शिमला-171001 फोन:2658285

21	पुलिस, अधीक्षक केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो रेलवे बोर्ड बिल्डिंग, शिमला-171003 फोन:2654110	22	उपमहानिदेशक, राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण, बीसवेल, शिमला- 171005 फोन:2633266/2633442
23	सहायक सम्पदा प्रबन्धक, सम्पदा कार्यालय, ग्रैंड होटल शिमला-171 001 फोन:2658121	24	अधीक्षक पुरातत्वविद् भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण,केन्द्रीय परिसर, एस0 ब्लाक, क0 नं0 309-10, लौंगवुड, शिमला-171 001 फोन:2651170/2650584
25	प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय शिमला-171 004 फोन:2806225	26	क्षेत्रीय प्रदर्शनी अधिकारी, डी0ए0वी0पी0- 27 रेलवे बोर्ड बिल्डिंग, शिमला-171 003 फोन:2652636
27	प्रमुख वैज्ञानिक एवं अध्यक्ष, भा0 कृ0 अनु0 संस्थान, क्षेत्रीय केन्द्र, अमरतारा काटेज, शिमला-171 004 फोन:2655305	28	अधीक्षण अभियन्ता, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, शिमला-171004 फोन:2657531/2652476
29	सहायक सूचना अधिकारी, पत्र सूचना कार्यालय, हिमलोक परिसर, शिवालिक खण्ड, तीसरी मंजिल, वैटसले, लौंगवुड, शिमला-171 001 फोन:2657462/2801668	30	राष्ट्रीय सूचना विज्ञान अधिकारी, राष्ट्रीय सूचना विज्ञान केन्द्र, छठी मंजिल, आर्मसडेल, हि0 प्र0 सचिवालय, छोटा शिमला-171002 फोन:2652216/2624045
31	रक्षा पेंशन संवितरण अधिकारी डी0पी0डी0ओ0, आरट्रैक परिसर शिमला-171 001 फोन:2807714	32	प्रभारी अधिकारी, राष्ट्रीय पादप आनुवंशिकी संसाधन ब्यूरो, क्षेत्रीय संस्थान फागली, शिमला-171004 फोन:2835459
33	परियोजना मूल्यांकन अधिकारी परियोजना मूल्यांकन कार्यालय, हिमाद्रि खण्ड, तीसरी मंजिल, सी0जी0ओ0 काम्पलैक्स, लौंगवुड, शिमला-171001 फोन:2657334	34	निदेशक, इंदिरा गांधी राष्ट्रीय मुक्त विश्वविद्यालय खलीनी, शिमला-171002 फोन:2624611/612
35	छावनी अधिशसी अधिकारी छावनी परिषद् जतोग, शिमला-17100 फोन:28375988	36	प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय जाखू, शिमला-171 001 फोन:2653202
37	सहायक निदेशक (विपणन) राष्ट्रीय बागवानी बोर्ड, 11 तल, निगम बिहार एच0पी0एम0सी0 काम्पलैक्स, शिमला-171002 फोन:2622908	38	प्राचार्य, केन्द्रीय विद्यालय जतोग, शिमला-171008 2837301
39	क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त, ब्लाक नं0 34 एस0डी0ए0 काम्प्लैक्स, शिमला-171009 फोन:2624620/2627684	40	प्राचार्य, केन्द्रीय तिब्बती विद्यालय, छोटा शिमला-171002 फोन:2620677/2624838
41	उप नियंत्रक, दीपक परियोजना द्वारा 56, सेना डाकघर शिमला। फोन:2830990	42	कार्यालय सहायक लेखा अधिकारी स्टेशन हैडक्वाटर, शिमला-171 003 फोन:2653237

43	मुख्यालय सेना प्रशिक्षण कमान शिमला-171 003 फोन:2804590	44	स्थानीय लेखा परीक्षा अधिकारी, स्टेशन हैडक्वाटर, शिमला-171 003 फोन:2653237
45	डिप्टी कमांडैंट, केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल, गृह मंत्रालय, शिमला एयरपोर्ट, शिमला -171011 फोन:2736284	46	अध्यक्ष, गेहूं अनुसंधान निदेशालय भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद क्षेत्रीय केन्द्र, फलावरडेल, शिमला-171002 फोन:2621978
47	उपमहालेखाकार (स्थानीय निकाय) गार्टन कैसल बिल्डिंग, शिमला-171003 फोन:2657629	48	पासपोर्ट अधिकारी, पासपोर्ट कार्यालय, रेलवे बोर्ड भवन, शिमला-171003 फोन:2650070/2658648
49	सहायक आयुक्त केन्द्रीय उत्पाद शुल्क/सेवाकर मंडल नजदीक बी.सी.पी.एम.,एल.ए. क्रोसिंग बालूगंज, शिमला-171005 फोन:2622644/2830112	50	नियंत्रक (संचार लेखा) ब्लॉक-18,एस0डी0ए0 कॉम्पलैक्स, कसुम्पटी, शिमला-171009 फोन:2620600/2627414
51	निदेशक मौसम विभाग, सेन्टर शिमला, बिबरा हाउस,क्लिफ एण्ड इस्टेट, शिमला-171001 फोन:	52	आयकर अपर आयुक्त, शिमला रेंज, शिमला, रेलवे बोर्ड भवन, शिमला-171003 फोन:2653203
53	मुख्य आयकर आयुक्त, रेलवे बोर्ड भवन, दि माल, शिमला-171003 फोन:2803232	54	प्रधान आयकर आयुक्त, रेलवे बोर्ड भवन, दी माल, शिमला-171003 फोन:2650758
55	श्रम प्रवर्तन अधिकारी, का0 श्रम प्रवर्तन, केन्द्रीय कार्यालय परिसर, लौंगवुड, शिमला-171001 फोन:2651632	56	उपायुक्त, विशेष ब्यूरो, ऑक लॉज एनैक्सी, नजदीक विधानसभा, शिमला-171004 फोन:
57	एकीकृत वित्तीय सलाहकार आर्ट्रैक शिमला 171003 फोन:2656799	58	उप महा निरीक्षक चिकित्सा प्रशिक्षण केंद्र एस.एस.बी. फरहिल, शिमला-171004 फोन:280440/2652329
59	प्राचार्य होटल प्रबंधन संस्थान कुफरी शिमला-171012 फोन:	60	प्रभारी अधिकारी केंद्रीय सहकारी विकास निगम , के.के. हाउस, अपर कैथू, शिमला-171003 फोन:2658735/2657689
61	सेनानायक, सशस्त्र सीमा बल, दूरसंचार प्रशिक्षण केंद्र कसुम्पटी शिमला-171009	62	प्राचार्य, जवाहर नवोदय विद्यालय, ठियोग,शिमला।
63	निदेशक केंद्रीय जल आयोग बी- 10 कसुम्पटी, शिमला-171009 फोन:2624036	64	क्षेत्रीय लेखा अधिकारी सी0बी0डी0टी0,ब्लॉक न. 22 आयकर भवन, कसुम्पटी, शिमला-171009 फोन:2626507/2629508
65	स्टेशन अधीक्षक, उत्तर रेलवे, रेलवे स्टेशन शिमला-171004	66	निदेशक शिमला हवाई अड्डा भारतीय विमान पत्तन प्राधिकरण जुब्बड़ हट्टी, शिमला - 171011.

पिछले अंक के बारे में पाठकों के विचार

1. श्री एस.एस कटैक, उपनिदेशक भारतीय वन सर्वेक्षण

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका 'यात्रा' का 19वां अंक हस्तगत हुआ। इसमें प्रकाशित सामग्री सभी क्षेत्रों का प्रतिनिधित्व करती हैं। एक एक लेख का उल्लेख करना संभव नहीं होगा तथापि प्रकाशित सामग्री समग्र रूप से राष्ट्रीय, सामाजिक और सामयिक संदर्भों से समृद्ध है। इस संग्रहणीय पत्रिका से संपादक मंडल द्वारा किए गए सराहनीय कार्य की झलक मिलती है। आशा करता हूँ कि 'यात्रा' का सफर इसी प्रकार सफलतापूर्वक चलता रहेगा, साथ ही यात्रा का यह निखार उत्तरोत्तर बढ़ता रहेगा। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को मेरी ओर से हार्दिक बधाई व शुभ कामनाएं।

2. प्रेम चंद, सचिव, भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान

संस्थान को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला द्वारा प्रकाशित पत्रिका 'यात्रा' का 20वां अंक प्राप्त हुआ। नराकास, शिमला के सदस्य कार्यालय हिंदी के प्रचार–प्रसार के प्रति किस प्रकार उत्साहित और समर्पित हैं, पत्रिका में निहित विभिन्न आयोजनों व गतिविधियों से स्पष्ट पता चलता है। सभी रचनाएं ज्ञानवर्धक हैं और उनमें लेखकों के मनोभावों व समाज, राष्ट्र तथा अपने देश की भाषा के प्रति उनके दृष्टिकोण का पता चलता है। पत्रिका का कवर पेज़ बहुत आर्कषक है जिसमें प्रदेश की सांस्कृतिक झलक मिलती है।

पत्रिका के सफल संपादन के लिए संपादक मंडल को बधाई तथा आगामी अंक के लिए शुभकामनाएं।

3. अनुपम सक्सेना, पी. प्रबंधक, भारत सरकार मुद्रणालय, शिमला

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति की वार्षिक पत्रिका 'यात्रा' का 20वां अंक प्राप्त हुआ। धन्यवाद। पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएं रोचक, पठनीय तथा ज्ञानवर्धक हैं। सभी रचनाकारों तथा सम्पादक मंडल को इस श्रेष्ठ प्रकाशन के लिए शुभकामनाएं। पत्रिका का मुखपृष्ठ आकर्षक एवं मनोहारी है तथा मुद्रण उच्च स्तर का है।

पत्रिका की निरन्तर प्रगति एवम् उज्जवल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, शिमला की गतिविधियां